सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

मई, 2010 वर्ष 09 अंक 3

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यूएस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

इमामत

तूने पूछी है इमामत की हक़ीक़त मुझसे
हक़ तुझे मेरी तरह साहिबे असरार करे

है वही तेरे ज़माने का इमामे बरहक़
जो तुझे हाज़िरो मौजूद से बैज़ार करे

मौत के आईने में दिखा कर रखे दोस्त
ज़िन्दगी और भी तेरे लिये दुशवार करे

देके एहसासे ज़ियां तेरा लहू गर्मा दे
फ़क़्र की सान चढ़ा कर तुझे तलवार करे

फ़ितन-ए-मिल्लते बैज़ा है इमामत उस की
जो मुसलमां को सलाती का परस्तार करे

डॉ० इक़बाल

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फ़ोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
कोशिश और तक्दीर	सम्पादकीय	5
कब्र की हौलनाकी	मु0 हसन अंसारी	7
जग नायक	मौ0 (स0) म0 राबे हसनी	8
इस्लामी अखलाक	मौ0 स0 अब्दुल्लाह हसनी	10
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	12
मुस्लिम समाज	मौ0 राबे हसनी	11
बच्चों की दीनी ताअ़ली पहले	एम0 हसन अंसारी	15
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्ला	16
जीवन यात्रा	मौ0 मुहम्मदुल हसनी	19
अरब सभ्यता	डॉ0 मु0 सलमान खां नदवी	22
बच्चों को मार से नहीं प्यार से पढ़ाएं	हबीबुल्ला आज़मी	24
प्रतिष्ठा मानवता की	एम हसन अंसारी	25
खवातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमान नगरामी	27
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	30
आल इन्डिया मुस्लिम प्रसनललॉ बोर्ड	रिपोर्ट	33
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशंरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

- मौ० शब्बीर अह़मद उस्मानी

अनुवाद : वही लोग हैं हिदायत (ईश मार्ग) पर अपने परवरदिगार (पालनहार) की ओर से और वही हैं मुराद (उद्देश्य) को पहुँचने वाले।[1] (5) बेशक जो लोग काफिर हो चुके बराबर है उन को तू डराये या न डराएं वह इमान न लायेंगे।[2] (6) मुहर कर दी अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर और उनकी आँखों पर पर्दा है[3] और उन के लिये अ़ज़ाब है (7) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और दिन क़ियामत पर और वह हरगिज मोमिन नहीं हैं (8) तफ्सीर : (1) यअ़नी अहले ईमान (ईमान वालों) के दोनों गिरोह है मजकूर–ए–बाला (उपरोक्त) दुन्या में उन को हिदायत (ईशा मार्ग) नसीब हुई और आखिरत में उन को हर तरह की मुराद (चाहत) मिले गी, जिस से मअ़लूम हो गया कि जो ईमान की निअ़मत और अअ़माले हसनः (भले कर्मों) से महरूम (वंचित) रहे उन की दुन्या व आखिरत दोनों बरबाद हैं। अब इन मोमिनीन के दोनों फरीक़ से फारिग़ हो कर उस के आगे कुफ्फार की हालत बयान की जाती है।

(2) इन कुफ्फार से खास कर वह लोग मुराद हैं जिन के लिये कुफ्र मुकर्रर हो चुका और दौलते ईमान से हमेशा के लिये महरूम कर दिये गये (जैसे अबू जह्ल व अबू लह्ब वगैरह) वरना ज़ाहिर है कि बहुत से लोग जो काफिर थे मुशर्रफ ब इस्लाम हुए और होते रहते हैं।

(3) उन के दिलों पर मुहर कर दी (यअ़नी हक बात को नहीं समझते) और कानों पर मुहर कर दी (यअ़नी सच्ची बात को ध्यान देकर नहीं सुनते) और आँखों पर पर्दा है (यअ़नी हक की राह नहीं देखते) कुफ्फार का बयान ख़त्म हुआ, अब मुनाफ़िकों का हाल इस के बाद तेरह आयतों में ज़िक्र किया जाता है।

(4) यअ़नी दिल से ईमान नहीं लाए जो हक़ीक़त में ईमान है, 'सिर्फ ज़बान से फरेब (धोखा) देने के लिये ईमान का इजहार करते हैं।

(5) यअ़नी उन की फरेब बाज़ी (धोखा देना) न खुदाए तआ़ला के ऊपर चल सकती है कि वह आलिमुलग़ैब (परोक्ष ज्ञाता) है और न मोमिनीन पर कि हक तआ़ला मोमिनीन को पैगम्बर के वास्ते और दूसरे दलाइल व कराइन (अन्य साधन द्वारा) मुनाफिकीन के फरेब से आगाह (अवगत) फरमा देता है। बल्कि उन की फरेब–बाजी का वबाल (आपत्ति) और उस की खराबी हक़ीक़त में उन ही को पहुँचती है मगर वह उस को अपनी ग़फलत (अचेतना) और जहालत (अज्ञानता) और शरारत से नहीं सोचते और नहीं समझते अगर ग़ौर करे तो समझ लें कि इस फरेब बाज़ी से मुसलमानों को नुकसान नहीं पहुँचता बल्कि उस का खराब नतीजा उन ही को पहुँच रहा है। हज़रत शाह अब्दुल कादिर साहिब (ऱह0) ने यहाँ "यशअरून" का तर्जमा बूझना यानी सोचना फरमाया।

(6) यअ़नी उन के दिलों में निफ़ाक़ और दीने इस्लाम से नफरत और मुसलमानों से हसद और इनाद यह मरज पहले से मौजूद थे अब कुर्आन के नाजिल होने और इस्लाम की शान व शौकत ज़ाहिर होने को और इस्लाम की तरक्की करने और मुसलमानों की खुदाई मदद देख कर उन की वह बीमारी और बढ़ गई।

(7) इस झूठ कहने से वही इस्लाम का झूठा दावा कि "हम ईमान लाए अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर" मुराद है जो ऊपर गुज़र चुका, अज़ाबे अलीम हक़ीक़त में उन के निफ़ाक़ की सज़ा है, केवल झूठ बोलने की सज़ा नहीं है हज़रत शाह अब्दुलकादिर साहिब (रह0) बड़ी दिक़्क़ते नज़री (दूर दर्शिता) से "यकज़िबून" का तर्जमा झूठ बोलने की जगह पर झूठ कहने से किया है।

शेष 26

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनुवाद : अताउल्लाह सिद्दकी

अमतुल्लाह तस्नीम

हुजूर (सल्ल0) के खाना नोश फरमाने का तरीका

हज़रत कअब (रज़ि0) से रिवायत है कि मैने देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन उनगलियों से खाना नोश फरमा रहे थे और जब फारिग हुए तो उन्गालियाँ चाट लीं। (मुस्लिम)

किस खाने में बरकत है

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन उन्गलियों के चाटने और बरतन को साफ करने का हुक्म दिया और फरमाया तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे किस खाने में बरकत है। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब किसी का निवालह गिर जाए तो वह उस को उठा कर साफ करके खा ले उस को शैतान के लिए न छोड़े और उन्गलियों के चाटने से पहले रूमाल से हाथ न पोछे। इस लिये कि उस को क्या मालूम कि उस के किस खाने में बरकत है। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान तुम्हारे हर काम में शरीक रहता है, हत्ता कि खाने के वक्त भी मौजूद रहता है, तो जब किसी का लुकमा गिर जाए तो उस को उठा कर साफ करके खा ले, शैतान के लिये न छोड़े क्योंकि उस को क्या मालूम कि किस खाने में बरकत है। (मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाना नोश फरमाते थे तो अपनी तीन उन्गलियाँ चाट लेते थे और फरमाते थे कि किसी का कोई लुक़मा गिर जाए तो उसको उठा कर साफ कर के खाले, उस को शैतान के लिए न छोड़ो और हम को बरतन साफ करने का हुक्म फरमाया और फरमाया कोई नहीं जानता कि उस के कोन से खाने में बरकत है। (मुस्लिम)

हज़रत अबू क़तादह (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरतन में साँस लेने से मना फरमाया है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दाएं तरफ़ वाला बाएं तरफ़ पर मुकद्दम है

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में पानी मिला हुआ दूध लाया गया, आप के दाएं तरफ़ एक देहाती था और बाएं तरफ़ हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) थे आप ने पी कर उसे देहाती को दे दिया और फरमाया दाहिना फिर दाहिना। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दाएं तरफ़ वाले लड़के को बाएं जानिब के बूढ़ों पर तरजीह

हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि0) से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में पीने की कोई चीज़ लाई गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पी ली, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दाहने तरफ़ एक लड़का बैठा थां और बाएं जानिब बूढ़े लोग थे आप ने लड़के से फरमाया क्या तुम इजाज़त देते हो कि यह मैं उन लोगों के दे दूं, लड़के ने अर्ज़ किया वल्लाह मैं आप से पस खूरदह पर अपने सिवा किसी को तरजीह न दूंगा, आप ने यह सुन कर प्यालह उस को दे दिया। (बुख़ारी,मुस्लिम)

मुश्क में मुंह लगा कर पानी पीने से एहतियात

हज़रत अबू सईद (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुली और

शेष पृष्ठ 6

कोशिश और तक्दीर

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

कामयाबी के लिये कोशिश मअ़कूल (उचित) और भरपूर हो। काम दुन्या का हो या दीन का कामयाबी के लिये मअ़कूल (बुद्धि संगत) तथा भरपूर हो। हाँ मुक़द्दर में जो है वही होगा लेकिन हम मुक़द्दर क्या जाने, हम मुक़द्दर से राजी हैं लेकिन हमको कोशिश का हुक्म है। हम यह न कहें कि किसमत में जन्नत होगी तो मिल के रहेगी बल्कि हम जन्नत हासिल करने के लिये मअ़कूल कोशिश करें अल्लाह तआ़ला ने यह नहीं फरमाया कि खामोश बैठो किसमत में जन्नत होगी तो मिलेगी बल्कि फरमाया "दौड़ पड़ो अपने रब की मग़फिरत और उस की जन्नत की तरफ़ जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है जो मुत्तक़ीन (संयमीयों) के लिये बनाई गई है।"

(आले इम्रान : 133)

इस आयते करीमा में अल्लाह की मग़फिरत हासिल करने और जन्नत का इनआ़म पा लेने के लिये उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ने दौड़ने यअ़नी चौकसी से कोशिश करने का हुक्म दिया गया है और बता दिया गया कि जन्नत का इनआ़म तो उन ही के लिये है जो अ़ल्लाह के अहकाम का लिहाज करते हुए तकवे की ज़िन्दगी गुजारें गे।

इसी तरह ध्यान दें इस्लाम में दुशमनी रखने वालों को मुकद्दर के हवाले करने का हुक्म नहीं है बल्कि हुक्म है कि जितना तुम्हारे बस में हो उन के मुकाबले की कोशिश करो जंगी सामान से, लड़ाई में काम आने वाले घोड़े पाल के (और आज कल के लिहाज़ से जदीद जंगी अस्लहे जमा कर के) धाक बिठाए रखो अल्लाह के अहकाम की मुखालफत करने वाले अल्लाह के दुश्मनों पर और इस्लाम पर चलने के सबब अपनी मुखालफत करने वाले और दीन पर चलने में रुकावट पैदा करने वाले अपने दुश्मनों पर नीज़ दूसरे हक के मुनकिरों पर जिन को तुम जानते भी नहीं हो मगर अल्लाह उन्हें जानता है और तुम जो कुछ अल्लाह की राह में खर्च करोगे उस का पूरा–पूरा बदला दिया जाएगा और ज़रा भीं हक तल्फी न की जाए गी। (देखिये सूर–ए–अनफाल : 60)

इस आयत में दहशत गर्दी की तालीम हरगिज नहीं है बल्कि जिहाद की तय्यारी का हुक्म है, जिहाद एक इबादत है, दहशत गर्दी एक गुनाह है और बड़ा गुनाह जिस में ऐसा हुक़्क़ुल इबाद है जिस की तलाफी जहन्नम में जलकर ही हो सकेगी। जिहाद के लिये पहली बात तो इस्लामी कियादत जरूरी है फिर जिहाद के असबाब का होना और मुत्तफक अलैहि आलिम का फत्वा होना है जब कि दुशमन के मुकाबले में अपनी तादाद और सामान जंग आधा तो हो, याद रहे हमला हो जाने पर अपने बचाव की लड़ाई "दिफाई जंग" और है और जिहाद फर्ज़ होना और है, यह बातें गलत फहमी से बचाने के लिये लिखी गई। नतीजा इस से यह निकालना है कि दुशमन के मुकाबले के लिये कोशिश करने का हुक्म है न कि मुकद्दर के बहाने हुक्म की मुखालफत करते हुए चुप बैठ जाना और अपने को दुशमन के हवाले कर देना है।

दुन्यावी मुआमले में कोई नहीं कहता कि बिन बोये खेत से गल्ला मिल जाएगा, फिर सिर्फ बीज बोकर किसान बैठ तो नहीं रहता उसके साथ सिचाँई, निकाई, खाद डालना, उस की निगरानी करना कहीं भी कोताही नहीं करता अब अगर किसी आसमानी बला से खेती खराब हो जाती है तो तकदीर के अकीदे से सुकून हासिल करता है। जो किसान अपनी काहिली से पूरी मेहनत न करने में तक्दीर का बहाना लेता है तो दूसरे उस को लअन तअन करते हैं कि मेहनत तो की नहीं तक्दीर को कोसता है। बेशक तक्दीर हक है लेकिन हम क्या जाने कि हमारी तक्दीर में क्या है हम को तो तक्दीर पर ईमान रखेंगे असबाब पर कोशिश व मेहनत का हुक्म है असबाब पर कोशिश व मेहनत करेंगे।

जो तालिब इल्म मेहनत करता है वही कामयाब होता है मेहनत पर कामयाबी उसकी किसमत है। हाँ कभी मेहनत करने वाला भी नाकाम हो जाता है यह उसका मुक़द्दर था लेकिन कभी मेहनत न करने वाला पास नहीं होता। अगर मेहनत न करने वाला पास हुआ तो उस ने मुनासिब मेहनत जरूर कर ली थी। या फिर चीटिंग की या उसकी तक्दीर थी कि चीटिंग से पास हो और सलाहीयत से महरूम हो वरना जिस तरह इम्तिहान न देने वाले का नतीजा नहीं। शेष पृष्ठ 32

प्यारे नबी की प्यारी बातें

टूटी हुई मश्क से मुंह लगाकर पानी पीने से मना फरमाया है।

(बुख़ारी,मुस्लिम)

हज़रत उम साबित कबसह (रज़ि0) बिन्त साबित से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए, मेरे यहाँ एक मश्क लटकी हुई थी आप ने खड़े होकर और मुंह लगाकर पानी पी लिया तो मैंने वह जगह जहाँ आप का दहने मुबारक लगा था काट कर तबर्रुकन अपने पास रख लिया।

खाने के बाद वजू जरूरी नहीं

हज़रत सईद (रज़ि0) बिन हारिस से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि0) से पूछा कि आग में पकी हुई चीजों में वजू के बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या हुक्म था, उन्होंने कहा हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ऐसा खाना कहाँ मिलता था और जब कभी ऐसा इत्तिफाक़ हो जाता था तो हमारे पास रूमाल भी न होता था, बस यही हथेलियाँ पहुँचे और पाँव फिर हम उसी तरह नमाज़ पढ़ लेते थे, वजू नहीं करते थे।

(बुख़ारी)

दो का खाना तीन को काफी

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो का खाना तीन आदमियों को काफी हो जाता है और तीन का खाना चार को किफायत करता है।

(बुख़ारी,मुस्लिम)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है आप इरशाद फरमाते थे कि एक आदमी का खाना दो को और दो का चार को और चार का खाना आठ आदमी को काफी हो जाता है।

(मुस्लिम)

पानी पीने का बयान

हुजूर (सल्ल0) के पानी पीने का तरीका

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी तीन साँस में पीते थे और हर मरतबा बरतन हटा कर साँस लेते थे।

(बुख़ारी,मुस्लिम)

पानी किस तरहा पीना चाहिए

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऊँट की तरह पानी न पिया करो, दो तीन, साँस पियो और पीने से पहले बिस्मिल्लाह कहो, फिर पी चुकने के बाद अल्लाह की तारीफ करो। (तिर्मिजी)

❑❑

अरब सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास

प्रायद्वीप अरब देशों का क्षेत्रफल बारह तेरह लाख वर्ग मी है। और उसकी सीमाएं शाम (सिरिया) से मिलती हैं। चार–पाँच लाख कोश मील रेगिस्तान है। सबसे अधिक प्रसिद्ध रेगिस्तान का नाम दहेना है। इस रेगिस्तान के उत्तर में बहरीन की राजधानी अल–अहसा है। जो दहेना के उत्तर और बीच क्षेत्र में घटित है जिसमें बड़े–बड़े रिगिस्तान भी है और नजद के दो रेगिस्तानों का सिलसिला शाम देश के विशाल रेगिस्तानों से जा मिला है। अरब देश में जगह–जगह पर्वतों के श्रंखले भी घटित है। लेकिन कोई पर्वत हरा भरा नहीं है।

प्रायाद्वीप अरब के रगिस्तानों को तीन भाग में बाँटा जा सकता है। 1 वह रेगिस्तान जिसे "समावा" कहते हैं। इस रेगिस्तान को आजकल "नुफूद" कहते भी हैं। (ये नाम प्राचीन अरबों में प्रसिद्ध नहीं था) ये उत्तर में स्थित है और उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लम्बाई 40 मील और पूरब से पश्चिम की ओर 180 मी है। इस के टीले अधिकतर रेतीलें हैं जिसमें पाँव धस जाते हैं। इसमें बहुत कम कुंऐ और नाले हैं। हवाएं इसकी रेत के साथ खेलती रहती है। और टीले बनाती रहती है। सर्दी के समय में यहाँ बारिश हो जाती है और उसके अन्य भागों में जंगली घास और रंग बिरंगे छोटे–छोटे बेल बूटे पैदा हो जाते हैं इसके अधिकतर निवासी बद्दू हैं।

❑❑

कब्र की हौलनाकी और हमारी बेबसी

- एम० हसन अंसारी

वह कब्र जिसको देखकर हमें हौल नहीं आता और हम वहाँ मैयत को दफन करते हुए भी गपशप में लगे रहते हैं। वहाँ भी मजाक जारी रहता है, वहाँ हम पर गफलत तारी रहती है। लेकिन मालूम होना चाहिये कि कब्र में जब मुर्दे को दफन किया जाता है तो मुर्दे को दफन करने के बाद वापस आने वाले लोगों की अभी उस से जुदाई नहीं होती, उन वापस जाने वालों के कदमों की आहट सुनता है कि इतने में फरिश्ते उसके पास आते हैं। उस को बिठा दिया जाता है और उस से पूछा जाता है कि जनाब वाला! आप का रब कौन है? आप का दीन क्या है? और यह जो अरब में एक साहब मबऊस हुए थे (जिन का अभ्युदय हुआ था) वह कौन थे? यह तीन सवाल किये जाते हैं। तो अगर वह मोमिन होता है तो वह बेधड़क जवाब देता है – मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है, मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं।

और फिर उस के लिये वह कब्र जहाँ तक उस की निगाह पहुँचती है, दाये बायें आगे पीछे कुशादा कर दी जाती है और जन्नत की खिड़कियाँ उस के लिये खोल दी जाती हैं, और जन्नत का बिस्तरा उस के लिये बिछा दिया जाता है, और राहत का सामान उस के लिये किये जाते हैं और वह आदमी जो अपने रब से बे खबर, अपने दीन से नावलद, मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल0 से वे तअल्लुक है, जब उस से सवाल किया जाता है, तो "हा हा" करता है और कहता है मुझे खबर नहीं, लोग जो कहा करते थे मैं भी कहता था। मुझे कुछ पता नहीं, तो फिर उस की यह पसुलियाँ इधर से उधर और उधर से इधर की जाती हैं।

कब्र जितनी हम बना कर आते हैं उस से भी तंग हो जाती है और फिर उस के ऊपर एक फरिश्ता मुकर्रर किया जाता है जो बहरा होता है और नाबीना (अन्धा) होता है, लोहे का गुर्ज उस के पास होता है और इस से उसको मारता है और वह रेजा–रेजा हो जाता है। कंण–कंण हो जाने के बाद वह गुर्ज को संभालता है तो फिर दोबारा सही हो जाता है। यह नहीं कि मारा, वह रेजा–रेजा हो गया और बस किस्सा खत्म। नहीं वह दोबारा सही हो जाता है और फिर वह मारता है और इसी तरीका से मारता रहता है, सजा देता रहता है। यह अल्लाह से और उसके रसूल सल्ल0 से और अल्लाह के दिये हुए दीन से जो लोग नावाकिफ, बेखबर और बेतअल्लुक होते हैं उन के लिये यह सजा होती है। यह मरहला आने वाला है। हमारे अपनों पर गुजर चुका है। एक सौ नहीं, दो सौ नहीं, तीन सौ पर नहीं, हजारी लाखों पर गुजर चुका है, और कल हमारे साथ पेश आने वाला है। अब वहाँ हम सही–सही जवाब देने वाला बनें या "हा हा" करने वाले बनें। इस के लिये हमें यहाँ तैयारी करनी है। क्योंकि ग़फ़लत में हम पड़े हुए हैं। हम ने अपने आप को दुनिया के इस कद्र करीब कर दिया है और इतना इस के करीब हुए कि इसके दास और कैदी हो गये हैं। हम रात दिन देखते हैं, रात में कब्र खोदते हैं, रात दिन मुर्दे दफन करते हैं, लेकिन हमें कुछ भी अपनी मौत का ख्याल नहीं, हमारा मौत की तरफ़ कोई ध्यान नहीं। हम कभी मौत की तैयारी के लिये फिक्रमन्द नहीं होते। यहाँ रिश्वत चल जाती है, नाजायज सिफारशें चल जाती हैं। यहाँ रोज धाँधली से काम ले लेते हैं। यहाँ अपनों को सुर्खरू और सरफराज करने की हम स्कीमें बनाते रहते हैं। दूसरों का हक मारने के ताने बाने बुनते रहते हैं। लेकिन वहाँ अल्लाह मालिक होंगे, उन्हीं की चलेगी। वहाँ न धाँधली चलेगी न जोर चलेगा। न ही कोई दूसरा जुगाड़ लगेगा। वहाँ ईमान और नेकियाँ काम आयेगी। धन दौलत काम नहीं आयेगे। यही सिक्का है कब्र के अन्दर काम आने वाला। इस के लिये हमें एहतमाम (सुव्यवस्था) करना चाहिये।

(शेखुल हदीस मौलाना सलमी उल्ला खाँ की मजलिस का अंश–उर्दू मासिक रिजवान मार्च 2010 से साभार)

किस्त : 17

जगानायक

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु० गुफरान नदवी

कुरआन मजीद में पिछली कौमों का जो तंज़किरह आया है उसमें उन कौमो की शरीअत में उनकी महदूद (सीमित) हालात के दाइरे के उमूर तक मआमला मिलता है लेकिन अब जो ज़माना शुरू हो रहा था उसमें अगरचि दुनिया और ज़िन्दगी के अपने इलाकाई (क्षेत्रीय) और नस्ली फ़र्क़ व एखतिलाफ़ के साथ इलाक़ों में बसने वाले लोग हो सकते थे जो यकसां मोसम और यकसाँ भौगोलिक हालात का भी फ़र्क था, सर्दी, गर्मी का फ़र्क और दिन व रात की मुद्दत में कमी व बेशी के लिहाज़ से फ़र्क़ पाया जाता है लेकिन समाजी और इल्मी तरक्क़ियों से उनमें आपसी क़ुरबत (समीपता) बढ़ने लगी थी, और इन्सानों के खुद अपने इलाक़ाई और समाजी हालात का जो फैलाव हो सकता है उन सबका लिहाज़ इस ज़माने के नबी की शरीअ़त में रखा गया, इसी के साथ–साथ आला इन्सानी क़दरों और रब्बुल आलमीन के हुक्मों की पाबन्दी वाली ज़िन्दगी के निज़ाम (प्रबन्ध) को क़ाएम करने के लिये ताक़त के इस्तेमाल की ज़रूरत पड़ने पर दुश्मन और मुख़ालिफ़ ताक़तों से मुक़ाबला करने का अन्दाज़ इख़्तियार करने का निज़ाम (प्रबन्ध) भी रखा गया, नया शुरू होने वाला ज़माना इल्म के फैलने का और वह हर इन्सान की ज़रूरत बनजाने का था, शायद इसी वजह से इस ज़माने के शुरू होने के लिहाज़ में पहली "वही इलाही" (ईश्वरीयवाणी) के जरये आप को जो हिदायत दी गई वह "इक़रा" (पढ़ये) के लफ़्ज़ से फरमाई गई और उसमें "क़लम" के किरदार (रोल) की भी अहमियत ज़ाहिर फ़रमाई गई जिससे साफ तरीक़े से नए ज़माने को "इल्मी ज़माना" का मुकाम अता किया गया, फरामया :

"पढ़ उस खुदा के नाम से जिसने दुनिया को पैदा किया, जिसने आदमी को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, पढ़, तेरा खुदा करीम (उदार)है वह जिसने इनसान को क़लम के जरये इल्म सिखाया वह जिसनें इनसान को वह बातें सिखाईं जो उसे मअ़लूम न थीं।"

(सुरः इकरा : 1–8)

इनसान के लिये इल्म की अहमियत ज़ाहिर की गई और इल्म का अहम जरया क़लम है इसका हवाला (सन्दर्भ) खुसूसियत के साथ दिया गया और ताकीद (चेतावनी) की गई कि इल्म को खुदा के नाम से जोड़ा जाए और ज़ाहिर है कि इल्म को अबतक खुदा के नाम से जोड़ने के बजाए आज़ाद छोड़ दिया गया था इससे इनसानों में अख़लाक़ी बिगाड़ पैदा हो गया था, साथ ही साथ यह भी बताया गया कि इनसान को ताक़त व सलाहियत हासिल होने पर उसमें सरकशी (अवज्ञाकारी) जुल्म और ज़ियादती का मिज़ाज बन जाता है लिहाज़ा उसको बताया कि वह एहतियात (सावधानी) करे, आख़िरत में अपने रब के सामने जवाब देह होना है, फरमाया :

"अगर इनसान सरकश हो जाता है जबकि अपने तेईं ग़नी (मालदार) देखता है कुछ शक नहीं कि उसको तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है"

(सूरः अलक़ : 6–8)

बअ़द की तारीख यह बताती भी है कि इल्म आम हो जाने का जो दौर (काल) इस्लाम की सरपरस्ती से शुरू हुवा उसमें इस्लाम के मानने वालों ने एक तरफ़ तो इल्म की सरबराही ही अन्तरराष्ट्रीय सतह पर की, और इल्म को फैलाया और तरक़्क़ी दी और उसके लिये नए–नए मैदान तलाश करके उनमें भी काम करने का सिलसिला क़ाएम किया और अपनी इल्मी तरक्क़ियों से इनसानों को फ़ाइदा पहुँचाया और दूसरी तरफ़ इल्म को खुदा के नाम से जोड़ा और इनसानी ज़िन्दगी की हलाकत और बरबादी के बजाए हिदायत और सुधार का ज़रया बनाया, इस्लाम ने इल्म में निरन्तर चिन्तन और रेसर्च के जरये और ग़ौर व फ़िक्र के उनसुर (तत्व) को अहमियत देकर इजाफा और नफा के क़ाबिल बनाने की दअ़वत दी,

और उसको सरकशी व ज़ुल्म और ग़लत इस्तेमाल से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा, इसके विरूद्ध दूसरी कौमों के कि उन्हों ने इल्म से नुक़सान ही पहुँचाया, इल्म को खुदा से अपरिचित बल्कि खुदा से इन्कार और सरकशी का ज़रया बना कर एटमबम और हलाक करने वाले घातक हथयार बनाए, और दिलों के बिगाड़ का काम किया और उसका गलत इस्तेमाल किया।

बहरहाल इस नबी की शरीअत इल्म से तअ़ल्लुक (संबन्ध) रखने वाली और इल्म के ज़रये इनसानी अक़्ल के तक़ाजों की पूरी रिआयत करने वाली हुई और इल्म खुदा को पहचानने और इनसानों की ख़िदमत करने का जरया बना, इल्म के साथ दौलत और खुशहाली के बारे में नया अन्दाज इख्तियार किया, इनसान की सरिश्त (प्रकृति) की तरफ़ इशारा किया गया कि वह सरकशी (बग़ावत) करने लगता है, खास तौर पर जब दौलत आती है और उसका ज़ेहन दीन से दूरी और खुदा की ताबेदारी से हटकर चलता है, वह समझता है कि यह उसकी मेहनत और इल्म के जरये हासिल हुवा है और वह जिस तरह चाहे उसे इस्तेमाल कर सकता है, इस तरह दीने इस्लाम की जो शकल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सरपरस्ती में हुई उसमें इनसानी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं की रहनुमाई रखी गई, जो बहुत मुकम्मल (पूर्ण) रहनुमाई थी और इनसान की सलामती (कुशलता) और दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी रखी गई और इसका भरपुर आग़ाज (आरंभ) हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुद मुबारक ज़िन्दगी से हुवा और आपकी तरफ़ से उन तमाम पहलुओं के सिलसिले में जरूरी रहनुमाई हुई।

सबसे ऊँची खूबियों वाली शखसियत

अल्लाह रब्बुल आलमीन को अपने इस आखिरी (अन्तिम) निशचित नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ऐसा बड़ा बोझ डालना था जो आम इनसान के बस में नहीं हो सकता, लिहाज़ा आपके ज़ाहिर व बातिन (प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष) को अल्लाह तआला ने सब इनसानों के मआमले में ज़ियादा मज़बूत और बलन्द सिफ़ात (उच्चविशेषताओं) वाला पैदाइश के वक़्त से बनाया था फिर उसके लिये खास तौर पर ज़िन्दगी की मुशकिल मंज़िलों और उतार चढ़ाओ से आप को गुज़ारा जो इन्सान में मुखतलिफ़ हालात को झेलने और पुख़ता इरादे व हिम्मत से मुनासिब राह निकालने के लिये मददगार हो सके, सबसे पहले आप का सामना यतीमी की बेचारगी से कराया गया, पैदाइश के बअद जब आप ने होश संभाला तो आप ने देखा कि आप बाप के साए से महरूम (वंचित) हैं, आप छः साल की उम्र को पहुँचे थे कि माँ का भी साया उठ गया, जब कि आप के इर्दगिर्द सैकड़ों आपके हमसिनों को माँ बाप का साया हासिल था, यह बात एक मअ़सूम और छोटी उम्र के बच्चे के दिल व दिमाग़ पर आम तौर पर एक सख़्त जेहनी बेचारगी और दिल के टूटने का सबब हुवा करती है, छः साल की उम्र में माँ का भी साया उठ जाने के बअद प्यार मुहब्बत करने के लिये दादा भी वह भी आठ साल की उम्र में जुदाई का दाग दे गए इन महरूमियों (वंचिताओं) को कोई बच्चा भली भाँति नहीं झेल पाता और उसकी ज़िन्दगी का रास्ता पेचीदा हो जाता है और ज़िन्दगी में उसकी कायमाबी संदिग्ध होकर रह जाती है लेकिन अगर इस बोझ को खुदा की दी हुई हिक्मत से वह झेल ले तो उसकी शखसियत (व्यक्तत्व) में मुशकिल हालात को झेलने और उसमें ज़रूरत और पसन्द की राह निकालने की अच्छी तरह सलाहियत (क्षमता) पैदा हो जाती है, अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हिम्मत खास तौर पर अता फरमाई जिसकी बिना पर आप में हालात और वाकिआत के तकाज़ों को मुनासिब ढंग से महसूस करने और ज़िन्दगी के चेलंजों का मुन्नासिब (उचित) ढंग से मुक़ाबला करने की समझ और हिम्मत पैदा हुई और जल्द ही आप ने इज़्जत वाली ज़िन्दगी का रास्ता इख़्तियार किया, और ज़िन्दगी को मुशकिल हालात के बावजूद आत्म सम्मान और उच्च साहस से सुसज्जित किया।

शेष पृष्ठ 21

क़िस्त–चार

इस्लामी अख़्लाक़ (नैतिकता) क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में

– मौ० सै० अब्दुल्लाह हसनी नदवी

"सच्चाई"

नैतिकता की सूची में सत्य को प्रथम स्थान प्राप्त है। इन्सान की हर कथनी व करनी के ठीक होने का आधार ये है कि उसका दिल तथा उसकी ज़बान परस्पर एक दूसरे के अनूरूप हो उसी का नाम सच्चाई है। अल्लाह फरमाता है "ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ रहो।"(सूरः तौबः)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की हदीस से इस बात का पता चलता है कि ईमान वाला झूठ जैसे घिनावने कार्य में कभी लिप्त नहीं हो सकता। ये बुराई किसी के भीतर मौजूद हो तो वह (कपटाचार) निफाक की निशानियों में से है। एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) से पूछा कि क्या मुसलमान नपुंसक हो सकता है? फरमाया हो सकता है, फिर पूछा क्या बखील (अतिकन्जूस) हो सकता है? जवाब दिया हाँ हो सकता है, फिर पूछा क्या झूठा भी हो सकता है? फरमाया नहीं।

हज़रत अब्दूल्लाह बिन अम्र (रज़ि0) कहते है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया जिसमें चार बाते हों वह पक्का कपटी (मुनाफिक़) है ओर जिसमें उनमें से एक बात हो तो उसमें निफाक़ की एक निशानी पाई जाती है (1) जब अमानत उसको दी जाए तो ख्यानत करे। (2) जब बात करे तो झूठ बोले। (3) जब वादा करे तो उसे पूरा न करे। (4) जब झगडे तो हक के विरुद्ध करे। (बुख़ारी) अन्य हदीस में है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "सच बोलना पुण्य का रास्ता बताता है और पुण्य स्वर्ग की ओर ले जाता है, इन्सान सच बोलता जाता है और सत्य बोलते–बोलते सत्यवान हो जाता है और झूठ दुष्कर्म (बदकारी) कर रास्ता बताता है और बदकारी दोज़ख़ (नर्क) को ले जाती है, आदमी झूठ बोलता जाता है यहाँ तक कि झूठ बोलते–बोलते वह अल्लाह के निकट झूठा लिखा जाता है।" (बुख़ारी)

क़ुर्आन ने ऐसे लोगों को सत्यवादी कहा है जो दिल से जो भी मानते हैं अमल से उसकी पुष्टि और जबान से बिला झिझक इकरार और विश्वास की दृष्टि से उसे देखते है। पवित्र क़ुर्आन में है "और जो अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान लाते हैं वह सत्यवान हैं।"

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षा ने सच्चाई का बयान विस्तार से किया है। जबान की, दिल की और अमल की सच्चाई को बहुत अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया है जब इन तीनों विशेषताओं से कोई

– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

मुसलमान पुर्ण हो तो पूरी तरह सच्चा और सत्यवान मुसलमान है। अल्लाह ये सब को नसीब फरमाए (आमीन!)

"उपकार"

दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे उसका दिल खुश हो और उसको सुकून पहुँचे, अल्लाह फरमाता है "ख़ुदा न्याय और लोगों के साथ उपकार करने का और करीबियों को देने का आदेश देता है।" (सूरः नह्ल) सबसे बड़ी बात ये कि स्वयं अल्लाह सबसें बड़ा उपकारी है, क्योंकि उसने हर इन्सान पर अनगिनत नेअमतें उतारी हैं और हर प्राणी उसके अहसान से दबा हुआ है उसको क़ुर्आन ने इन शब्दों में बयान किया है कि "यदि अल्लाह के उपकार गिनो तो उनको पूरा न गिन सकोगे निःसन्देह इन्सान अन्यायी ना शुक्रा है।" (सूरः इब्राहीम)

अतः अब ये बात और महत्वपूर्ण हो जाती है कि जब अल्लाह ने हम पर उपकार किया तो हम उसके अन्य दूसरे वन्य और सामाजिक प्राणियों के साथ भी उपकार करें और उसमें कोताही न करें। यदि किसी की परेशानी को देखे तो उसकी सहायता करें और उसका हाथ बटाएं।

हज़रत बरा बिन आजिब (रज़ि0) कहते हैं कि एक देहाती हज़रत

मुहम्मद (सल्ल0) की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थना की कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसी बात बताइये जिसके करनें से जन्नत (स्वर्ग) मिले। इर्शाद हुआ तुम्हारी बात तो थोड़ी है लेकिन तुम्हारा प्रश्न बहुत बड़ा है तुम जानों (लोगों) को स्वतंत्र करो और गर्दनों को छुड़ाओं उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या ये दोनों बाते एक ही नहीं? फरमाया नहीं अकेले यदि किसी को आजाद करते तो ये जान का आजाद करना है और किसी दूसरे के साथ शरीक होकर किसी की स्वतंत्रता की कीमत में आर्थिक सहायता देना गर्दन छुड़ाना है, लगातार देते रहो ओर अत्याचारी रिश्तेदार के साथ भलाई करो यदि ये भी न कर सको तो अपने आप को भलाई के अतिरिक्त अन्य बातों से रोको।" (मुस्तदरक हाकिम)

"क्षमा, सहनशीलता व उदारता"

दरगुजर करना अल्लाह की बहुत बड़ी विशेषता है यदि इस विशेषता को छोड़ दिया जाए तो ये भीड़ वाली दुनिया दो दिन में विरान हो जाए। कुर्आन में है कि "वही है जो अपने बन्दों की तौबः स्वीकारता है और बुराईयों को माफ करता है।" कुर्आन की ये आयत बताती है कि जो लोग अपने भाईयों की गलतियों से दरगुज़र करते हैं और कुसूरों को माफ करते हैं तो अल्लाह भी ऐसे लोगों को माफ करता है। अल्लाह फरमाता है "और चाहिये कि वह क्षमा कर दे और दरगुजर कर दे क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे और अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।" (सूरः नूर)

अन्य स्थान पर ईमान वाले की ये विशेषता बयान की गई है कि "और जब क्रोध आए तो क्षमा करते हैं" दूसरी जगह है "अलबत्ता जो धैर्य रखे और (दूसरे की खता) बख्श दे तो निःसन्देह ये बड़ी हिम्मत का काम है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "और अल्लाह उस व्यक्ति का सम्मान ही बढ़ाता है जो क्षमा करता है। क्षमा और सहनशीलता का तात्पर्य भी यही है कि बदले की क्षमता होनें के बावजूद किसी की नागवार व क्रोधित करने वाली बात को बर्दाश्त कर लिया जाए। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि "पहलवान वह नहीं है जो लोगों को कुश्ती में पछाड़ दे बल्कि पहलवान वह जो गुस्से के समय अपने मन पर काबू रखे।" (बुख़ारी)

हज़रत अबु हुरैरः (रज़ि0) कहते हे कि एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की सेवा में एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) मेरे कुछ रिश्तेदार है मैं उनके साथ मिलता हूँ वह काटते हैं, भलाई करता हूँ वह बुराई करते हैं, वह मेरे साथ जेहालत करते हैं मैं संयमता का परिचय देता हूँ, हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने ये सुनकर फरमाया यदि ऐसा ही है जैसा तुम कहते हो तो तुम उनके मुंह में गर्म राख भरते हो और जब तक इस स्थिति पर जमे रहोगे अल्लाह की ओर से तुम्हारी सहायता होती रहेगी। (मुस्लिम)

इसी के साथ नम्र व्यवहार करने का भी आदेश है। अल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को सम्बोधित करते हुए कहता है कि "तो अल्लाह की रहमत के सबब से तुम उनके लिये नर्म दिल हुए और यदि तुम व्यवहार के अक्खड़ और ह्रदय के कठोर होते तो ये लोग तुम्हारे पास से तितर–बितर हो जाते।

(सूरः आले इमरान)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने इर्शाद फरमाया कि जो नर्मी से वंचित रहा वह भलाई से महरूम रहा और फरमाया कि तीन आदतें जिस व्यक्ति के भीतर होंगी अल्लाह अपने साये को उसपर फैलायेगा और उसको स्वर्ग (जन्नत) में दाखिल करेगा। (1) कमजोर के साथ नर्मी करना, (2) माता–पिता पर मेहरबानी करना, (3) दास पर उपकार करना।

(तिर्मिजी)

मेरे नर्मी के साथ सादगी की भी शिक्षा दी गई है हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिये खाकसारी करता है अल्लाह उसको बलन्द करता है। हज़रत लुकमान की नसीहत कुर्आन ने बयान की है, इर्शाद होता है कि "और लोगों से बेरूखी न कर और ज़मीन पर इतराकर न चल क्योंकि अल्लाह इतराने वाले, शेखी बघारने वाले को पसन्द नहीं करता है,

शेष पृष्ठ 12

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु० ज़फर आलम नदवी

प्रश्न : अगर कोई शख्स किसी काम के करने की क़सम खाए और वह काम न कर सके तो अब वह क्या करे? शरीअत का इस बारे में क्या हुक्म है?

उत्तर : अगर कसम ऐसी हो जिसमें गुनाह न हो या दूसरों के लिये नुक़सान की वजह न हो तो जहाँ तक हो सके पूरी करे, लेकिन अगर कसम तोड़नी पडे तो कसम का कफ्फारः अदा करे, और कफ्फारः ये है कि दस गरीबों को दो वक्त खाना खिलाए जो खुद आमतौर पर खाता हो या दस गरीबों को कपड़े पहनाएं, अगर इन दोनों में से किसी चीज पर कुदरत न हो तो तीन रोजे लगातार रखे, अल्लाह तआला फरमाते हैं "जो खाना तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, उसी में से दस गरीबों को औसत दरजे का खाना खिलाना या कपड़े पहनाना या एक गुलाम को आजाद करना उसका कफ्फारः है अगर उसकी क्षमता न रखता हो तो फिर तीन रोजे रखना है।" (सूरः माइदः 89) इस आयत और दूसरी हदीसों से कसम के कफ्फारः की सराहत बड़े वाजेह अन्दाज में मिलती है।

प्रश्न : कफ्फारः किसे कहते हैं?

उत्तर : कफ्फारः ऐसे अमल को कहते है जो गुनाह के असर को मिटा दे और आदमी को इस गुनाह से पाक करदे, अल्लाह तआला ने कुछ कोताहियों के लिये कफ्फारात मुतअय्यन किये हैं जैसे रोजः तोड़ने का कफ्फारः, ज़ेहार का कफ्फारः और कसम का कफ्फारः वगैरह

(फतावा हिन्दिय : 2/60)

प्रश्न : एक शख्स ने कसम खाई कि वह अपने भाई से बात नहीं करेगा, अब बार-बार ऐसी नौबत आ रही है कि वह अपने भाई से बात करे ऐसी स्थिति में वह क्या करें?

उत्तर : भाई से बात न करना क़तअरहिमी है जो जाइज़ नहीं है, इसलिए इस कसम को तोड़ दे और कफ्फारः अदा करे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समरह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमाया कि ऐ अब्दुर्रहमान जब तुम कसम खाओ और उसपर कायम न रहने को बेहतर समझो तो जो बेहतर हो उसे कर लो और कसम का कफ्फारः अदा कर दो। (अबूदाऊद, हदीस न0. 3374) इस रिवायत से ये मालूम हुआ कि भाई से बात करले और कसम का कफ्फारः अदा कर दे। कसम का कफ्फारः जैसा कि उपर के मसअले में बयाँन किया गया है कि दस गरीबों को दो वक्त का वह खाना खिलाएं जो आमतौर पर खुद खाता हो या दस मिस्कीनों को कपड़े बनवा दे अगर उन दोनों पर कुदरत न हो तो लगातार तीन रोज़े रखे।

(देखिए सूरः माइदः 89 रुहुलमुख्तार 5/505)

प्रश्न : एक आदमी ने कुर्आन की कसम खाई कि वह कभी भी अपने एक दोस्त से बात नहीं करेगा, अब उनसे कारोबारी ज़रूरत की वजह से बात करना जरूरी हो गया है, अब वह क्या करे? कसम पूरी करना बेहतर है या बात करना, क्या कुर्आन की कसम खाने से भी कसम हो जाती है?

उत्तर : कुर्आन शरीफ की कसम खाने से कसम हो जाती है। एक मोमिन से तीन दिन से जियादा बातचीत से रूक जाना दुरूस्त नहीं है। हदीस शरीफ में इसकी मनाही है, इसलिए अपने दोस्त से बात कर ले और दिल की कुदूरत (वैमनस्य) दूर करके कारोबार जो जाइज हो जारी रखे, और इस कसम को तोड़ने की वजह से कफ्फारः अदा कर दे। कफ्फारः की तफ्सल ऊपर बयान कर दी गई है।

प्रश्न : ए आदमी को ये खबर लगी कि उनका लड़का हास्पिटल में बहुत बिमार है, पता नहीं हयात से हैं या नही, उनकी माँ घबरा गई और नज़ मानी कि मेरा बच्चा अच्छा हो जाए और बच जाए तो मैं एक बकरा ज़ब्ह करूंगी। बाद में मालूम हुआ कि उनका लड़का बीमार ही नहीं हुआ था बल्कि ये खबर झूठी थी।

अब क्या उसपर नज़्र पूरी करना यानि बकरा ज़ब्ह करना जरूरी है?

उत्तर : जिस वक्त लडके की माँ ने नज़्र मानी है उस वक्त उनका लड़का बिमार नहीं था इसलिए ये नज़्र वाजिब नहीं हुई तो उसकी अदाइगी भी वाजिब नहीं होगी।

(देखें अद्दुरूल्मुख्तार अलारद्दुल्मुख्तार 3/424)

प्रश्न : एक नवजवान बहुत बिमार था, बचने की उम्मीद कम थी। उसने नज़्र मानी कि अगर सेहतयाब हो गया तो एक बकरा ज़ब्ह करूंगा। माशाअल्लाह वह जल्द ही ठीक हो गया। क्या उनपर बकरा ही ज़ब्ह करना वाजिब है या उसकी कीमत गरीबों को दे देना काफी है। बकरे की उम्र क्या होनी चाहिए, अगर कीमत दुरूस्त हो तो किस उम्र के बकरे की कीमत देनी होगी?

उत्तर : जाइज चीज की नज़्र मानने से उसकी अदाइगी वाजिब हो जाती है, इसलिए बकरा ज़ब्ह करना वाजिब है। चुंकि नज़्र में बकरे की नज़्र मानी है बल्कि मुल्लक बकरे की नज़्र मानी है तो कम से कम एक साल का बकरा होना चाहिए। अल्लामा कासानी (रह0) लिख़ते है कि "नज़्र के जानवर की उम्र वही होनी चाहिए जो कुर्बानी के लिए जरूरी है।" याद रहे कि बकरे का गोश्त सिर्फ फकीर लोग ही खा सकते हैं मालदार और हैसियत वाले नहीं।

प्रश्न : मक्का या उसके आसपास नौकरी के लिए रहने वाले दूसरे दश के लोगों को हज के ज़माने में काम बढ़ जाने के कारण छूट्टी नहीं मिलती। ऐसी हालत में क्या यह जायज़ है कि वे उस साल हज से उस साल रुक जाएं और अगले वर्ष हर कर लें?

उत्तर : इस सिलसिले में कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। सबसे पहली बात यह कि अल्लाह तआला ने हज के फ़र्ज़ होने के लिए, "उस घर तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्ति" (कुर्आन, 3 : 97) की शर्त लगायी है। यह बहुत सारंगर्भित शब्द है, इसमें हर प्रकार की जानी, माली और कानूनी सामर्थ्य शामिल है। एक व्यक्ति जो नौकरी पर इस शर्त पर गया है कि वह इतने समय तक छूट्टी नहीं लेगा और हज के ज़माने में भी काम करेगा। वह मक्का में रहने के बावजूद हज की कानूनी सामर्थ्य से महरूम होगा। इसलिए फ़कीहों ने लिखा है कि खुद मक्का में रहते हुए भी किसी व्यक्ति को इहसार तहक्कुक (ऐसी रुकावट जो शरीअत में मान्य हो) हो सकता है।

जिस व्यक्ति को मक्का में एहसार पेश आ जाए और वह तवाफ़ और वकूफे अरफ़ा से रोक दिया गया हो वह मुहसर (जिसे रोक दिया गया हो) है, इसलिए कि उसके लिए हज पूरा करना कठिन है तो उसका हाल उस व्यक्ति के जैसा होगा जिसे हलाल स्थानों में इहसार पेश आया हो।

अल्लामा शैख इब्ने हुमाम ने लिखा है कि मक्का में इहसार जरूरी नहीं हक दुश्मन की ही वजह से हो, बीमारी के कारण भ ऐसा हो सकता है। इसलिए ऐसी स्थिति में ऐसे मुलाजिमों को पहले तो पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हज की इजाजत मिल जाए चाहे, वेतन बिना छुट्टी के ही रूप में हो और अगर ऐसी हालत नहीं बन सके तो अगले वर्ष तक के लिए हज तर्क कर देना चाहिए।

(जदीद फिक्ही मसाइल –1 से)

❑❑

इस्लामी अख़्लाक .....

तथा अपनी रफ्तार में म्यानरवी इख्तियार कर और (किसी से बात कर) तो होले से बोल (क्योंकि बुरी से बुरी आवाज गधों की आवाज है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि अल्लाह ने मुझे पर वह्य भेजी कि खासकसारी अपनाओं ताकि कोई किसी पर अत्याचार न करे और कोई किसी के मुकाबले में गर्व न करे। (अबूदाऊद)

"खुश कलामी"

सम्बन्धों को खुशगवार बनाने और मेल–जोल पैदा करने में, सलाम करने, धन्यवाद देने, अच्छी दुआएं देने, कुशलक्षेम पूछने और एक दूसरे का सम्मान करने का बड़ा दखल है। कुर्आन कहता है कि "और (ऐ पैगम्बर) मेरे बन्दों से कह दे कि वह बात कहे जो सबसे अच्छी हो।" (सुरः इसराइल) हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि जो अल्लाह और प्रलय पर विश्वास रखता है उसको चाहिये कि वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे।" (मुस्लिम) (शेष अगले अंक में)

❑❑

किस्त चार

समाज सुधार

मुस्लिम समाज इस्लामी संस्कृति

- मौ० राबे हसनी

इस्लाम में इल्म हासिल करने की बड़ी ताकीद की गई है जिस की मिसाल दूसरे धर्मों में नहीं मिलेगी, बल्कि दूसरी इन्सान की बनाई व्यवस्था में भी नहीं मिलेगी तालीम (विद्या) के महत्व को कुरआन की सब से पहली 'वही' में सराहा गया। कलम इल्म की सब से बड़ी और बुनियादी अलामत (पहचान) है। अल्लाह ने कलम की कसम खाई है। कुरआन में इन्सान की तालीम का उल्लेख जगह–जगह आया है। उन आयतों का तर्जमः यहाँ दिया जाता है जिन में इल्म का उल्लेख आया है –

"और उसने आदम को (सब चीजों के) नाम सिखाये।"

"इन्सान को वह बातें सिखाई जिन का उस को इल्म न था।"

"खुदा से तो उस के बन्दों में से वही डरते हैं जो ज्ञानी हैं।"

"और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में गौर करते (और कहते हैं) ऐ! परवरदिगार तूने इस (प्राणिजगत) को बेफाइदा नहीं पैदा किया। तू पाक है और ऐ अल्लाह तू हमें आग के अजाब से बचा।"

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल0) ने सहाबा को इल्म हासिल करने की रगबत (इच्छा) दिलाई। लिखना सीखने का हुक्म फरमाया।

हमें जिस इल्म की ज़रूरत है उस की दो किस्में हैं – एक वह जिस का सम्बन्ध आखिरत से है, यह इल्म हमें बताता है कि इन्सान का अपने रब (पालनहार) से क्या लगाव होना चाहिए, इस पर परलोक में क्या फल मिलेगा, और दुनिया में इस के क्या तकाजे हैं। कि इन्सान परलोक में बदले का पात्र बन सके। यह इल्म (ज्ञान) नबियों और रसूलों के वास्ते से आता है। उन के जानशीन फिर उनके पैरोकार इस इल्म की व्याख्या करते हैं और उसे आम करते हैं। सबसे आखिरी नबी मुहम्मद (सल्ल0) थे। वह जो ज्ञान लेकर आये और इस के बारे में जो निर्देश दिये वह अन्तिम आदेश करार पाये। अब इस में कमी–बेशी नहीं की जा सकती। सिर्फ इस की वयाख्या का काम जारी रहेगा क्यों कि वह किसी इन्सान का इल्म नहीं बल्कि कुरआन ईशवाणी है।

इल्म की दूसरी किस्म वह है जिसका सम्बन्ध इस संसार और मानव–जीवन से है। यह ज्ञान मानव की क्षमता व सोच का खजाना है। इस के सिलसिले में आप (सल्ल0) ने इरशाद फरमाया, "यह तुम्हारी दुनिया के मामलों से सम्बन्धित है, इस में मनुष्य अपने चिन्तन और अपने अनुभवों से फैलाव पैदा करता रहता है, नये–नये परिवर्तन होते रहते हैं। नये–नये क्षितिज की खोज होती रहती है। इस ज्ञान के द्वारा मानव दुनिया को नची दिशा देता है। नयी–नयी खोज करता है। मानो रास्ता खुला है और मानव सक्षम है। इस इल्म से जितना चाहे अपने फायदे की खातिर लाभ उठाये, इस शर्त के साथ कि इस्लाम और इल्मे आखिरत से टकराव न पैदा होने पाये। आप (सल्ल0) ने इस सिलसिले में इन्सान को खुद मुख्तार करार दिया है। फरमाया 'तुम अपने दुनिया के मामलों से ज्यादा वाकिफ हो।' आप (सल्ल0) ने शरीअत के दोनों स्रोत–कुरआन और हदीस में मेहनत और प्रयास करने का हुक्म दिया है। अतएवं मुसलमानों ने अपने उठान के दिनों में इस पर काफी ध्यान दिया और अपनी खोज और अनुभवों से इस इल्म को मालामाल किया, इस के दायरे को खूब बढ़ाया। यह किस्सा उस समय का है जब पश्चिम पर नींद तारी थी। लेकिन बाद के ज़माने में मुसलमानों ने सुस्ती दिखाई। उन पर भी नींद तारी हो गयी, दूसरी तरफ़ पश्चिम जाग चुका था। अपने पूर्व प्राप्त ज्ञान से खूब फाइदा उठा रहा था जिस में मुसलमानों के ज्ञान का भी हिस्सा था। योरोप को अपनी कोशिश का फल मिला, और पश्चिम बाजी ले गया। नयी–नयी खोज हुई। जीवन व्यवस्था में क्रान्ति पैदा हुई। यह

चीज इस्लाम से टकराने वाली न थी। इस्लाम ने तो उन्हें अपनाने का हुक्म दिया था। कुरआन कहता है –

तजुमः "और जहाँ तक हो सके उनके (मुकाबले के) लिये डटे रहो, बल से और घोड़ों के तैयार रखने से।"

"पूछो तो कि जीनत और आराइश (सजावट) तथा खाने पीने खाने (पीने) की पाक चीजें बन्दों के लिये पैदा की हैं, इन को हराम किस ने किया।"

यह तमाम चीजें हम से तकाजा कर रही है कि हम अपने दुनियावी कामों में इस नयी प्रगति से भरपूर लाभ उठायें, अपने कलचर को और संजायें। खुदा ने दुनिया की फाइदा व खूबी की चीजों से लाभ उठाने की इजाजत दी है, शर्त केवल यह है कि जो सीमाये निर्धारित कर दी गयी हैं उन का उलघँन नहीं किया जाये।

पश्चिमी सभ्यता का जायजा लेते समय हम देखते हैं कि औरत को आखिरी दर्जे तक आजादी दे दी गयी है। ऐसी खुली छूट प्राचीन रूमी तथा यूनानी सभ्यता से अवश्य मेल खाती है लेकिन इस्लाम से वह जोड़ नहीं खाती। इस लिये हमारे वास्ते तो अत्यावश्यक है कि सब से पहले हमें इस्लाम की काइम कर्दा सीमायें मालूम हों। फिर इन सीमाओं का पूरा ध्यान रखा जाये। पश्चिम धर्म को इबादतगाहों में सीमित समझा जाने को मानता है। लेकिन हमारे इस्लाम में मजहब का दुनिया से टकराव नहीं है। मजहब का दारयरः सिर्फ मस्जिदों के अन्दर सिमट कर नहीं रह जाता है बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दाखिल होता है और मार्ग दर्शन प्रदान करता है।

संस्कृति (कलचर) के मैदान में भी हमे इस महत्वपूर्ण बिन्दु को सामने रखना होगा। अतएवं साहित्य और ललित कलाओं (फन) के मैदानों में भी यह बात अनिवार्य होगी कि वह इस्लामी शिक्षाओं से टकराते न हों। खुदा कानून की सीमाओं व धाराओं से वह आजाद न हों।

अदब (साहित्य) व फन के मैदान में हमें किस हद तक आजादी हासिल है इस का अन्दाजा लगाने के लिये पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की जीवनी और आप (सल्ल0) की शिक्षाओं पर एक नजर डालना काफी होगा।

(जारी.....)

बच्चों की दीनी तालीम पहले

अलीमियाँ **- एम० हसन अंसारी**

"कौमों के एकजुट फैसले ने दुनिया के नकशे और कौमों की तकदीरें बदल दी हैं। आज जिस चीज की हम को सब से ज्यादा ज़रूरत है, और जो तमाम अवसरों और रूकावटों पर गालिब (वर्चस्व प्राप्त करना) आ सकती है ओर जिसके सामने परिस्थितियों को हथियार डालना पड़ेगा, वह हमारा यह फ़ैसला (संकल्प) है कि हम अपने बच्चों की दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) को हर तालीम (शिक्षा) पर प्राथमिकता देंगे। और बिना उस जरूरी दीनी तालीम को जिस से वह अपने पैदा करने वाले को, अपने पैगम्बर को और अपने अकीदा (आस्था) और दीन के फरायज (डयूटी) को पहचान सकें, खालिस रवाजी या व्यवसायिक शिक्षा दिलाना (बच्चों की दीनी तालीम की अनदेखी करके) गुनाह और अपने मजहब से बगावत समझेंगे। अगर हमारा यह फैसला है और हम इस में सच्चे हैं तो दुनिया की कोई ताकत, कोई लालसा, कोई मसलहत (दूरदर्शित) कोई दफा हमको इस सिराते मुस्तकीम (सीधी राह) से हटा नहीं सकती। और हमारी नस्लों को इस्लाम की नेमत से महरूम (वंचित) नहीं कर सकती। और अगर हमारा यह फैसला नहीं तो हुकूमत की कोई रियायत, कोई छूट, कोई आरक्षण, कोई व्यवस्था, हमको इस फसाद, दीन से फिरजाने (इलहाद) से बचा नहीं सकती जिस की तरफ़ दुनिया तेजी से बढ़ रही हे। जो कौमें अपने बारे में खुद फैसला न कर सकें, उन की कोई मदद नहीं कर सकता, और जो कौमें खुद फैसला कर ले, उनके फैसले को काई बदल नहीं सकता।"

❑❑

किस्त 23

हम कैसे पढ़ायें?

अध्याय सात

शिक्षण-विधियाँ

- डॉ० सलामतुल्लाह

अनुवादः एम0 हसन अंसारी

हम इस अध्याय में पढ़ाने की ख़ास –ख़ास विधियों का उल्लेख करेंगे और यह बतायेंगे कि हर एक तरीके में क्या खूबियाँ और क्या खामियाँ हैं और इन से पूरा फाइदा उठाने की क्या शर्तें हैं।

1 लेक्चर–विधि

यह वह तरीका है जिस में टीचर वह तमाम बातें बच्चों को बता देता है जो उन्हें मालूम नहीं होती। टीचर लेक्चर देता है और छात्र सुनते हैं। टीचर की बुद्धि काम करती है। लेकिन छात्र मात्र स्रोता होता है।

विशेषतायें

यह मेथड शायद टीचर के लिये सब से आसान है, उसके लिये सिर्फ यह जरूरी है कि वह विषय–वस्तु का अच्छा जानकार हो। अपनी तरफ़ से वह बहुत सी बातें जतनपूर्ण ढंग से बयान कर देता है। वह विषय (टापिक) को ही सब कुछ मान कर नहीं चलता है, उस के अलग–अलग भागों का आपस में सम्बन्ध दिखाता है और उसके खास–खास विन्दुओं पर ध्यान दिलाता है। यह बाते तो अपनी जगह बहुत अच्छी है किन्तु इस में सन्देह है कि वह बातें जो इस तरह प्रस्तुत की जाती है अच्छी तरह बच्चे उसे समझ भी लेते हैं या नहीं। बहुत मुमकिन है कि स्वयं बच्चों ने ध्यान देकर इस पाठ में कोई प्रतिभाग न किया हो, इस का क्या नतीजा होगा, साफ ज़ाहिर है।

इस के बावजूद कि बच्चों में मानसिक सक्रियता जागृत नहीं होती, फिर भी कुछ दशाओं में इस विधि का प्रयोग लाभदायक और अपरिहार्य है जैसे अचर–ज्ञान कराने में, सामाजिक विषय या भाषा के शिक्षण में, विशेष कर किस्से कहानियाँ बयान करने में यही विधि व्यवहार में लाई जा सकती है। क्यों कि कहानी के लिये क्रमबद्धता (तसलसुल) कायम रखना भी जरूरी है। बच्चों के हस्तक्षेप से कहानी का प्रवाह (रवानी) बाकी नहीं रहता। इस किलये कहानियाँ पढ़ाने में इस मेथड को प्राथिमकता देना चाहिये। कभी–कभी यह विधि ऐसे विषय–वस्तु के प्रस्तुत करने में भी प्रयोग की जा सकती है. जो टापिक से सम्बन्धत है, किन्तु स्वयं बच्चों का ध्यान इस और नहीं आ सकता है।

प्रयोग की शर्तें

प्रत्येक दशा में यह तरीका केवल उसी समय कामयाबी से प्रयोग हो सकता है जब टीचर अपने पढ़ाने की ओर प्रत्येक सोपान पर बताई हुई बातों को उचित प्रश्नों के द्वारा दाहेराता जाये, नही तो इस बात का खतरा है कि पढ़ाया हुआ पाठ बच्चे नहीं समझ सकेंगे, और टीचर का सारा प्रयास बेकार जायेगा।

यह मेथड छोटे बच्चों के शिक्षण में जहाँ तक हो सके कम प्रयोग करना चाहिये क्योंकि वह चुपचाप रह कर किसी बात को ज्यादा देर तक ध्यान से नहीं सुन सकते, प्रायः देखा गया है कि टीचर उन की समझ से ऊपर बातें बताने की कोशिश करता है, क्योंकि बिना प्रश्न–उत्तर के यह अनुमान लगाना कठिन है कि उस की बातें बच्चों की समझ में आ भी रही हैं या नहीं। बड़े बच्चों के शिक्षण में इस विधि को प्रयोग करने में एक दूसरा अवगुण यह है कि लेकरचर–विधि बहुत आसानी से "इमला कराने की विधि" में बदल जाता है, और बच्चे लेक्चर के नोट लिख कर उन्हें केवल परीक्षा पास करने के उद्देश्य से रट लेते हैं। और इससे शिक्षण का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

टीचर को यह स्वर्णिम सिद्धान्त हमेशा याद रखना चाहिये कि बच्चों को वह बात कभी न बताई जाये जिस को वह स्वयं अपने प्रययास से निकाल सकते हैं।

2 एसाइनमेन्ट मेथड (गृहकार्य)

इस विधि में टीचर पाठ्यपुस्तक से कुछ काम बच्चों के सुपर्द कर देता है और बच्चे दिये गये निर्देशों के अनुसार उसे पूरा करते हैं। फिर पूरे क्लास की उपस्थिति में अथवा अलग–अलग हर बच्चे से उस काम पर बहस करता है और जो बाते हैं, उन्हें स्पष्ट कर देता है।

विशेषतायें

वर्तमान समये में "एसाइनमेन्ट" अर्थात इस प्रकार का काम जिन का ऊपर उल्लेख किया गया है टीचर के काम का एक महत्वपूर्ण अंग समझा जाने लगे हैं। अनुभव से भी मालूम हुआ है कि इस तरह बच्चे जल्द तरक्की करते हैं। यद्यपि एसाइनमेन्ट पर दूसरे देशों में बहुत पहले से बल दिया जा रहा है, हमारे यहाँ देर से यह काम शुरू हुआ है फिर भी टीचर एसाइनमेन्ट के भावार्थ से वाकिफ नहीं हैं। वह बच्चों को घर पर करने के लिये काम तो दे देते हैं किन्तु इस का ध्यान कम देते हैं कि यह काम ऐसा हो कि जिस में तलाश और कोशिश की ज़रूरत पड़े।

निर्देश

1. ज़हाँ तक हो सके एसाइनमेन्ट पहले से तैयार करना चाहिये क्यों कि इन में एक विशेष प्रकार की तरतीब की ज़रूरत है। अच्छे और लाभप्रद एसाइनमेन्अ बिना काफी सोच–विचार के तुरन्त तैयार नहीं की जा सकती। यह बात और है कि एसाइनमेन्ट देते समय समयानुसार उन में कुछ परिवर्तन करना पड़े।

2. एसाइनमेन्ट के शब्द सुस्पष्ट होना चाहिये ताकि छात्रों को उसका भावार्थ समझने में किसी प्रकार की शँका न रहें छात्रों से पूछ लेना बेहतर है कि क्या वह इस बात को ठीक तरह से समझ गये हैं कि उन्हें क्या करना है। निर्देशों की भाषा सरल और सुस्पष्ट हो। इस प्रकार के गृह कार्य कि अपनी किताब को पृष्ट 20 से 30 तक पढ़ो, अथवा अमुक अभ्यास के सभी प्रश्नों को हल करो, अथवा अकबर का पूरा पाठ पढ़ो। कुछ लाभप्रद नहीं। इन से असल कार्य स्पष्ट नहीं होता, और इस तरह से सोचने की प्रक्रिया में इन से कोई मदद नहीं मिलती। सही तरीकः यह है कि किताब के अमुक पृष्ठों में जो चीज दी हुई है उस एक प्रश्न या समस्या के रूप में प्रस्तुत किया जाये और उसके हल के लिये सन्दर्भ हेतु पाठ्यक्रम की पुस्तक अथवा और दूसरी किताबों के जरूरी हिस्से पढ़ने को दिया जायें।

3. एसाइनमेन्ट के साथ उन्हें पूरा करने के बेहतरीन तरीके भी बताये जायें। मुमकिन है कि बच्चे यह तो साफ तौर पर समझ गये हों कि उनहें क्या करना है, लेकिन उसे करते समय लम्बी और समय नष्ट करने वाली विधि अपनायें। इस लिये काम करने के तरीकों को तरतीब देने का हुनर भी बच्चों को सिखाना चाहिये। यह टीचिंग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। और बच्चों को कार्य के सही होने की जाँच के तरीकों से भी वाकिफ कराना चाहिये ताकि वह स्वयं फैसला कर सके कि उन्हें कहाँ तक कामयाबी हुई है। गणित, वर्तनी और व्याकरण के कार्य में यह बात अपेक्षाकृत आसानी है।

4. एसाइनमेन्ट दूसरे शैक्षणिक कार्यों की तरह पिछले काम से जुड़ा होना चाहिये। ताकि सीखने के कार्य में आसानी हो। ओर जानकारी की एकाई कायम रहे। और उसे बच्चों की योग्यता, क्षमता व ग्राहयता के अनुसार होना चाहिये। न तो इतनी आसान हो कि उन्हें पूरा करने में किसी प्रकार के मानसिक प्रयास की ज़रूरत ही न हो, और न इतना कठिन हो कि बच्चे हिम्मत हार बैठें। और पढ़ने से नफरत हो जाये। ऐसी कठिनाइयाँ जिन्हें बच्चे हल करने की क्षमता न रखते हों, टीचर को स्वयं हल कर देनी चाहिये, नही तो सारा एसाइनमेन्ट बेकार साबित होगा।

5. गृहकार्य में न सिर्फ पढ़ना लिखना बल्कि–बल्कि दूसरे कार्य भी शामिल किये जा सकते हैं। जैसे इतिहास के शिक्षण के क्रम में बच्चों से कराया जा सकता है कि वह मानचित्र पर पर्यटकों की यात्रा के मार्ग अथवा महान ऐतिहासिक आन्दोलनों की सोपानवार मंजिलें दिखायें भूगोल और गणित में सन्दर्भ की पुस्तकों से कुछ आँकडे एकत्र करे ग्राफ ओर चार्ट बनाये आदि।

6. व्यक्तिगत विशिष्टाओं का ध्यान रखते हुए बच्चों को किसी और

कमजोर बच्चों को संक्षिप्त और आसान। इस प्रकार सब को अपनी क्षमाताओं के अनुसार समुचित विकास का अवसर मिलेगा।

7. गृहकार्य व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार को होना चाहिए सहकारिता की भावाना ओर आदत पैदा करने के लियें सामूहिक गृह कार्य की भी उतनी ही ज़रूरत है जितनी व्यक्तिगत गृहकार्य की। यदि टीचर यह चाहता है कि किसी व्यापक विषय के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से अध्ययन किया जाये तो वह कक्षा को कई टोलियों में बाँट कर हर टोली को विषय के एक एक पहलू पर जानकारी एकत्र करने का काम सुपुर्द कर सकता है। जैसे यदि यह उद्देश्य है कि बच्चे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड (जिला पंचायत) अथवा मूनिस्पल बोर्ड (नगर पालिका) के बारे में जानकारी हासिल करें तो उन के विभिन्न विभाग जेसे शिक्षा, सफाई, रौशनी, सड़कें आदि अलग– अलग टोलियों के सिपुर्द की जा सकती हैं कि वह अपने–अपने विभाग के बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करें और फिर इन तमाम मालूमात को एकजा कर के पूरी क्लास के सामने प्रस्तुत किया जाये।

8. गृहकार्य पूरा होने के बाद क्लास में विचार–विमर्ष होना चाहिये, इस से व्यक्तिगत तथा सामूहिक सफलता का अन्दाजा लगाया जा सकता है। अगर बच्चों के मन में अक्सर बातें साफ नहीं हैं या यह कि टीचर सारे समय कठिनाइयों को दूर करने में व्यस्त रहता है तो समझना चाहिये कि गृहकार्य में समय नष्ट हुआ है। इस अनुभव के आलोक में आगे का काम तरतीब देना चाहिये।

प्रयोग की शर्तें

एसाइनमेन्ट विधि प्रायथमिक कक्षाओ में प्रयोग नहीं हो सकती किन्तु पढ़ाई, लिखाई और गणित पर बच्चों को योग्यता प्राप्त कर लेने के बाद, यह विधि सफलतापूर्वक प्रयोग की जा सकती है।

(जारी...)

❑❑

साथ मिल कर चलो आश्ती से

– हिदायतुल्लाह सिद्दीकी

काम बनते रहे दोस्ती से
फासले बढ़ गये दुश्मनी से

कुछ भी रिश्ता है अगर आदिमी से
प्यार करते रहो हर किसी से

कुश्तों खू हो मुबारक तुम्ही को
फाक़ा बेहतर हमें रहजनी से

राजे दहशतभरी रिशवतें हैं
अद्ल पामाल है बस इसी से

हम न होंगे तो तुम क्या रहो गे?
बाज आ जाओ दहशातगरी से

फूल बन जाते हैं खार अक्सर
छेड़खानी करो न कली से

लड़खड़ाने भटकने लगे सब
क्या मिला क्या नई रोशनी से

ग़म के तूफां ने उकसाया होगा
कौन मरता है अपनी खुशी से

मुत्ताहिद हो के रहना भी सीखो
कुछ मिल भी है रस्साकशी से

परचमें अम्न लेकर हिदायत
साथ लिम कर चलो आश्ती से

जीवन–यात्रा

- मौ० मुहम्मद-अल-हसनी

- एम० हसन अंसारी

जीवन–यात्रा किसी साथी व गाइड और किसी सच्चे हमदर्द के बिना पूरी नहीं हो सकती। ज़िन्दगी के मुसाफिर को पग–पग पर मार्गदर्शन की, सावधानी की, सहानुभूति व स्नेह की, प्रोत्साहन व दुख व दर्द में भागीदारी की ज़रूरत पड़ती है। उस को इस महत्वपूर्ण संवेदनशील और लम्बे सफर के लिये कुछ साथियों का चयन करना पड़ता है, किसी पर भरोसा करना पड़ता है, किसी की बात माननी पड़ती है किसी का सुझाव मानना पड़ता है। अपने दुख–दर्द आराम व राहत, सुकून व इतमीनान और बेयकीनी व बेइतमीनानी (अनिश्चितता) साराँश यह कि इस सफर के हर मोड़ पर और हर हालत में उन को इन निष्ठ मार्गदर्शकों और साथियों से शक्ति प्राप्त होती है। सन्तोष मिलता है, उस की आशँकायें दूर होती है, बेइतमीनानी दूर हो जाती है। और वह नये उत्साह और विश्वास के साथ इस राह में बहादुरी के साथ आगे बढ़ता रहता है। अगर यह जीवन–साथी न हो तो जीना दूभर हो जाये, जीवन नीरस हो जाये पग–पग पर ठोकरे लगें, हर मोड़ पर शँका हो कि सही दिशा क्या है? मंजिल की दूरी ओर अकेला होने के एहसास का बोझ, दिल की घुटन ओर भावनाओं व विचारों का बन्धन, इन्सान की सूझबूझ को निमम्बित कर दे वह ठगा का ठगा रह जाये, कुछ सुझाई न दे। और उसको ऐसा महसूस हो कि इस नीरस जीवन से मौत बेहतर है।

यही वह हक़ीक़त है जिस को हम माहौल का नाम देते हैं। माहौल वास्तव में नाम है जीवन के कुछ साथियों का जो इस सफर में हमारे साथी होते हैं और एक टोली के रूप में हमारे साथ चलते हैं। उन को हमारी मदद की ज़रूरत होती है और हमें उन की मदद की इन में से कोई किसी से बे नियाज (बेपरवाह) नहीं हो सकता। एक दूसरे पर हुकूमत नहीं चला सकता। सब एक नवका के सवार और एक फिक्र में गिरफ्तार नजर आते हैं वह है जल्द से जल्द और सकुशल व सलामती के साथ मंजिल तक पहुँच जाना।

लक्ष्य के बाद दूसरे नम्बर पर जो चीज़ आती है वह यही माहौल है। अर्थात यह तय करने के बाद कि हमारी दिशा क्या होगी किन किन सोपानों से गुजरना होगा और अन्तिम लक्ष्य क्या होगा? हमें यह देखना चाहिए कि इन साथियों की मंजिल कुछ और तो नहीं है? वह काबा के बजाय तुर्किस्तान तो नहीं जा रहे हैं। इस का अच्छी तरह इतमीनान कर लेने के बाद हमें यह देखना होगा कि इन साथियों में मकसद की लगन कितनी है, उन की तलब सच्ची हैं या झूठी, वह इस राह की तकलीफों को सहन करने और उस का हक अदा करने के योग्य हैं भी या नहीं? इस राह के सिर्फ फूल ही उन्हें प्रिय हैं, काँटों से उन्हें नफरत व दुराव है या इन का वह हाल है जो शायर ने इस तरह बयान किया है :

गुश्लशन परस्त हूँमुझे गुल ही नहीं अज़ीज़
काँटों से भी निबाह किये जा रहा हूँ मैं।

ऐसा तो नहीं है कि "वास्तविक लक्ष्य" तक पहुँचने के बजाय वह इस लम्बे सफर की चकाचौंध में इस तरह फंस चुके हों कि अब उन्हें लक्ष्य तक पहुँचने की कुछ ज्यादा फिक्र न हो। उन की भावनायें, उन की दिशा और दशा ऐसी तो नहीं जो इस मंजिल के तकाजों और इस राह की शर्तों के बिल्कुल खिलाफ हो, और वह अपने दिल को मारने, इच्छाओं को दबाने, मंजिल की याद में मजा लेने और इस की तकलीफों से लाभान्वित होना उस की नेमतों का शुक्र अदा करने और अपनी बेमायगी (लुच्छ) व बेहुनरी, बेबसी, बेसरोसामानी के एहसास और इस गौरव मयी निरुबल पर गर्व व आत्मविश्वास से बिल्कुल अपरिचित हों, और यह उन के लिये अर्थहीन अथवा बेजान उसूलों से ज्यादा महत्व न रखती हो।

लक्ष्य सुनिश्चित हो जाने के बाद ज़िन्दगी के हर मुसाफिर की पहली ज़रूरत ऐसे मार्गदर्शकों और हमसंफरोकी तलाश हैं जो इस कसौटी पर खरे उतरते हों और जो

कुछ जबान से कहते हों उस को सच कर दिखाते हों। उन की ज़िन्दगी सदमार्ग, सत्यनिष्ठा, सच्चाई, प्रेम और वफ़ादारी का आकर्षक नमूना हो।

यह नुस्खा न किसी बुद्धि की ईजाद है, न कोई वैचारिक (नज़रियाती) बहस कुरआन ने ईमान वालों के लिये यही कार्य विधि तजवीज़ किया।

तर्जमः ऐ ईमान वालों! अल्लाह का अदब व लेहाज करो, और सच्चे लोगों के साथ रहा करो।''(9–119)

हमारे वर्तमान समाज की बहुत बड़ी ख़राबी और उसकी बहुत बड़ी कमजोरी ज़िन्दगी के सफर में माहौल के महत्व की अनदेखी करना और उस से ग़फ़लत बरतना है।

हम में से प्रत्येक व्यक्ति के लिये चाहे वह किसी स्तर और किसी स्टैंडर्ड का हो अच्छे मार्गदर्शकों, सलाहकारों तथा हमसफरों का चयन एक ऐसा नाजुक काम है जिस में तनिक सी चूक सारी ज़िन्दगी को गलत रास्ते पर डाल सकती है अथवा उस में रूकावटें पैदा कर सकती है और इन्सान को अनेक चीजों में उल्झा सकती है।

अगर आदमी का माहौल अच्छा न हुआ और उस के साथी उस स्तर और पैमाने पर चलने वाले न हों, उस के धारण करने वाले न हों जो कुर्आन और हदीस ने सुनिश्चित किया है, और जिस का नमूना सहाबः और हमारे पूर्वजों ने पेश किया है, तो अपने चिन्तन के लिये उस को बहुत सी चीजों का सहारा लेना पड़ता है। दीनी (धार्मिक) किताबों का अध्ययन, दीनी जल्सों में हाजिरी और इस तरह दूसरी चीजें वह हैं जिन से वह अपनी धार्मिक भावना की तसकीन और अपने अध्यात्मिक रिकि की पूर्ति करना चाहता है। निश्चय ही यह चीजें कभी–कभी बड़ा काम कर जाती हैं, और इसकी सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं कि पवित्र कुर्आन की किसी आयत ने किसी खास घटना ने, किसी शेर (काव्य–पंक्ति) ने और किसी किताब या तकरीर ने इन्सान में एक ऐसी बेचैनी पैदा कर दी जो फिर कभी न मिट सकी और रंग लाये बिना न रही किन्तु सामान्यतः ऐसा नहीं होता। अल्लाह की सुन्नत यह है कि आदमी को इस के लिये वह सब कुछ करना पड़ता है जिस का हुक्म अल्लाह ने उस को दिया है।

इस बात को एक मामूली मिसाल से समझा जा सकता है। तेज गर्मी ओर लू के ज़माने में प्यास ओर बेचैनी की तकलीफ को दूर करने के लिये एक तरीका यह है कि बार–बार शर्बत पिया जाये, बर्फ का इस्तेमाल किया जाये। लेकिन सब जानते हैं कि इन चीजों का लाभ अस्थायी होगा ओर गर्मी की तेजी और लू के थपेड़ों और प्यास से आदमी को नजात न मिलेगी। लेकिन अगर वह एयरकन्डीशन्ड घर में रहने लगे तो उसके लिये मानों मौसम ही बदल जायेगा, बल्कि यूं कहना चाहिये कि उस की दुनिया ही बदल जायेगी। जल्सों, तकरीरों, किताबों, रिसालों सब का यह हाल है कि वह इस माहौल का सिर्फ एक हिस्सा हैं, कुल नहीं। इन से माहौल को शक्ति प्राप्त हो सकती है, यह उसका दायरः बढ़ा सकते हैं, लेकिन इन में से कोई एक चीज अकेले न माहौल की जगह ले सकती है और न उस की ज़रूरत पूरी कर सकती है।

कुर्आन की इस आयत में हम को अच्छे माहौल की तलाश के लिये ध्यान देने को कहा गया है और यह कहा गया है कि हम अच्छे और सच्चे लोगों का साथ और उनकी संगत अपनायें, और ज़िन्दगी का यह सफर उन के साथ करें।

यह साथी और रहबर (गाइड) जिस स्तर के होंगे उसी हिसाब से मंजिल पर पहुँचा जा सकेगा। उन में जिस दर्जे का ईमान व यकीन, निष्ठ और बेगर्जी, हकतलबी और ख़ुदातरसी होगी, वह जितने सिद्ध होंगे, उन में जितनी तासीर और ईमान व यकीन की हरारत होगी, उन को ख़ुदा की ज़ात व सिफात का जितना यकीन होगा उतना ही वह दूसरों के लिये लाभप्रद और प्रभावी होंगे। और हम को जल्द से जल्द वह 'लक्ष्य' प्राप्त होगा जो प्रत्येक युग में ईश्वर के परमभक्तों की तमन्ना, उन के सारे प्रयासों का निचोड़ और सृष्टि का हासिल है।

जीवन के इस लम्बे सफर में हर प्रकार की पेशबन्दी जरूरी है, क्यों कि यह सफर कठिनाईयों से भरा हुआ, फितना को बढ़ाने वाला और खतरनाक है। छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखना अपरिहार्य है और अपनी हर कमजोरी पर नजर रखने और उस के इलाज की जरूरत है। लेकिन सबसे ज्यादा बुनियादी और

कीमती बात ऐसे रहबरों और हमसफरों का चयन है जो हमारी इस ज़िन्दगी को कारआमद बनाने, इस जीवन को सुआरथ बनाने, इस तुच्छ धूल–कण को सर्वोत्कृष्ट प्राणी बनाने में हमारे लिये सार्थक सिद्ध हों, और हम को इस अत्यन्त महत्वपूर्ण सच से गाफिल न होने दें जिस पर इन्सान का नफा–नुकसान टिका है। और जिस की ओर इस भौतिकवादी युग में सबसे कम ध्यान दिया जा रहा है और जिस को इस तथाकथित "हकीकत पसन्दी" के दौर में फन्डामेन्टलिज्म, सन्यास (रहबानि–यात) और तर्के दुनिया कहा जाता है।

आखिरत (परलोक) को याद दिलाने वाला लज्जतों और सरमस्तियों को बर्बाद करने वाली चीज, मौत की याद ताजा करने वाला, मरने से पहले मर जाने अर्थात् अपनी इच्छाओं से गुजर जाने और मनमानी को पछाड़ देने की सीख देने वाला जन्नत का शौक, और खुदा की पक्की तलब पैदा करने वाला और उस पर तन–मन वारी करने, और उस की याद में मस्त करने वाला, और उसके लिये हर तकलीफ और हर तरह का खतरा सहर्ष स्वीकार करने का बुलावा देने वाला माहौल हम में से प्रत्येक के लिये एक ऐसी अपरिहार्य ज़रूरत है जिस को टालना जीवन के साथ जुवा खेलने अथवा अपने जीवन को अनिश्चितता, अविश्वास और शंका–आशंका के हवाले कर देने जैसा है, और ऐसे रास्ते पर चलना है जिस के बारे में यह कहना कठिन है कि वह कहाँ और कब खत्म होगा, और इस मुसाफिर को कहाँ पहुँचायेगा।

इस माहौल की तलाश को हमारे जीवन के दूसरे कामों में सर्वोपरि होना चाहिये। खुदा की ज़मीन खाली नहीं है। उस के परमभक्त हर युग में और हर जगह पैदा होते रहे, और जब तक खुदा चाहेगा, यह सिलसिला कायम रहेगा। उसके परमभक्तों में आज भी वही तासीर है और उनसे आज भी वही फायदा पहुँच सकता है, और ज़िन्दगी के इस सफर में उन पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन सच्ची तलब और प्यास शर्त है।

हर चीज़ तलब पर कायम है। अगर हमारे अन्दर तलब नहीं तो फरिश्ते भी आसमान से उतर आयें तो हमें नफा नहीं पहुँचा सकते। ज़िन्दगी की नज़ाकत और माहौल के महत्व का एहसास एक ऐसा दरवाजा है जिस से हम इस माहौल के अन्दर दाखिल हो सकते हैं। और जीवन–यात्रा खुदा की मदद की छाया में तय कर सकते हैं यह एहसास पैदा हो सके और अपनी शक्ति प्राप्त कर के हम इस महत्वपूर्ण मामले की तरफ़ पूरा ध्यान दे सके और किसी समय इस से गाफिल और असावधान न हों।

(पन्द्रह रोज: तामीरे हयात, लखनऊ, 25 दिसम्बर 2009 से साभार)

❑❑

जगनायक

चुनाँचि प्रारंभिक जीवन काल ही से आप आस पास के खराब माहौल को नापसन्द करने लगे थे, आपने इस बात को बहुत महसूस किया। कि लोगों में एक तरफ़ तो इज्जत वाली ज़िन्दगी का शौक़, वीरता और सहास, और विभिन्न मानव सम्मान की खूबियाँ हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ धारमिक भावना की तसल्ली के लिये मन गढ़त इन्सानी और हैवानी पुतले बना कर उनको पूजते और उनके सामने अपनी ज़रूरतें रखते, और यह ऐसा करते हैं जैसे किसी जिन्दा इन्सान बल्कि इन्सान से बड़ी ताकत के सामने अपनी ज़रूरत का सवाल किया जाता है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दोनों बातों में कोई जोड़ नजर नहीं आता था और महानता का एहसास बल्कि एहसास बरतरी (श्रेष्ठता) और दूसरी तरफ़ इतना नीचे उतर आना कि बेजान मिट्टी और पत्थर जैसी चीजों के सामने अपने को गिराना और बेइज्जत करना, आप इस खियाल से और ऐसी गिरी पड़ी बातों से अपने को अलग रखते और शायद यह भी एक वजह थी कि आप को "आसमानी वही" (ईश्वरीय बाणी)के आने और उसके जरये रहनुमाई मिलने से पहले अपने इर्द गिर्द के हालात से मुतमइन (सन्तुष्ठ) न होने पर तनडाई एखतियार करके आप ज़िन्दगी और दुनिया के छुपे हुवे राजों पर सोचने का खियाल पैदा हुवा और उसके लिये आप शहर से बाहर पहाड़ के गार (गुफा) में जाकर कुछ वक्त गुजारने लगे थे।

❑❑

अरब सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास

- मौ० डा० मु० सलमान खा नदवी

हमारे पुस्तकालय आज भी ऐसी संक्षिप्त पुस्तक अथवा पत्रिका से खाली प्रतीत होते हैं। जो वर्तमान काल की आवश्यकताओं के अनुसार प्राचीन काल के अरब संस्कृति एवं सभ्यता को दर्शा सके और इस्लाम से पूर्व काल की सामाजिक एवं साँस्कृतिक स्थिति की छाया को दर्शा सकें और उसमें इस्लामी काल के आरम्भ से लेकर कुल खिलाफतें इस्लामी सभ्यता का इतिहास लिखा हो ताकि कम समय में शोधकर्ता के लिए (पूरी–पूरी जानकारी) पूरा–पूरा ज्ञान प्राप्त हो सकें और वह इस्लामी इतिहास का भी ज्ञान प्राप्त कर सकें। और 1400 वर्षीय इतिहास के अन्धकार में अरब सभ्यता चमकते सूर्य की तरह उज्जवलित हो जाए।

मेरा प्रयास यही है कि सम्पूर्ण इस्लामी खिलाफत जो भूतकाल में प्रायद्वीप अरब, ऐशिया, अफरीका अथवा यूरोप के मानचित्र पर दिखाई देती है उसे पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिए कबीलों स्थानों और वंशो का मानचित्र तैयार कर दिया जाय क्योंकि इस से कम समय में सरल रूप से ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

यह प्रतिलिपि कई किस्तों में इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित हो रही है आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि अपने अनमोल सुझाव दे ताकि अग्रिम संस्करण में संसोधन किया जा सके।

पूर्व इस्लामी काल में अरब देशों कि स्थिति

और ये उनकी हालत के बदलाव की ओर संकेत देती है। जो बाद में घटित हुआ।

बद्दुओं और शहरियों की अधिकतर विशेषताएं मिलती–जुलती है। बदलते हुए मोसम के अनुकूल होने के लिये शहरी भी एक स्थान से दूसरे स्थान को चले जाते थे ओर इधर–उधर घूमा करते थे। दूसरी ओर बद्दू केवल घूमने के प्रेमी न थे। बल्कि उनके पीछे कुछ और उद्देश्य जैसे ऊपजाउ भूमि, चरागाह पानी आदि की खोज करना होता था। इसके अतिरिक्त उनके जातीय संगठन, धर्म, रीति–रिवाज आदि में अधिक अन्तर न था।

किसी भी देश के निवासियों के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक और धार्मिक जीवन के निर्माण तथा विकास में वहाँ के वातावरण और भौगोलिक दशा का बहुत बड़ा हाथ होता है। अरब वासियों पर भी अपने देश की भौगोलिक स्थिति और वातावरण का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। ऐसे देश और जातियाँ कम होंगी। जहाँ के लोगों के चरित्र निर्माण, रहन सहन के ढंग, आचार और व्यवहार धार्मिक विश्वास, राजनैतिक संगठन और नैतिक जीवन पर वहाँ की भौगोलिक दशा का इतना प्रभाव पड़ा हो, जितना अरब के वातावरण का वहाँ के रहने वालों पर पड़ो।

इस्लाम धर्म के प्रारम्भ होने से पहले का काल जाहिलियत काल के नाम से प्रसिद्ध है। जाहिलियत काल को भी दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(1) प्रथम जाहिली काल।

(2) द्वितीय जाहिली काल।

प्रथम जाहिली काल प्रागैतिहासिक काल से प्रारम्भ होकर पाँचवी शताब्दी ई0 में समाप्त होता है। द्वितीय जाहिली काल 500 ई0 से प्रारम्भ होकर 622 ई0 अर्थात इस्लाम धर्म के प्रारम्भ होने तक का है 'जाहिलियत' का शाब्दिक अर्थ 'अज्ञानता' होता है परन्तु यह अर्थ नहीं है कि यह काल अज्ञानता का काल था क्योंकि उस समय दक्षिणी अरब शिक्षा तथा सभ्यता के क्षेत्र में काफी उन्नति कर चुका था। वास्तव में इस शब्द का अर्थ जंगलीपन और बर्बरता से है अर्थात ऐसा काल जिसमें अरबवासी कोई नियमित जीवन नहीं व्यतीत कर रहे थे, और उनका कोई निश्चित धर्म नहीं था। उनके लिये लूटमार ओर पारस्परिक

शत्रुता तथा युद्ध एक साधारण सी बात थी।

1 डा0 अली जव्वाद 'मुफस्सल फी तारीखे अरब कबल इस्लाम' में लिखते हैं। इतिहासकार इस्लाम से पहले की तारीख को जाहिली काल के नाम से जानते हैं जाहिलियत की परिभाषा इस्लाम के आरम्भ से हुई। जो गर्मियों में तुखूम की तरफ़ जाते हैं, क्योंकि गर्मियों में यहाँ कुछ पैदा नहीं होता और अधिक गर्मी पड़ती है। वह सर्दियों में फिर वापस आ जाते हैं और वह अपने ऊँटों और बकरियों को यहाँ चराते हैं।

रेगिस्तान समावा की ओर एक पर्वत है जिसे आजकल कोहे समरा कहते हैं। ये जलाली शक्ल का एक पहाड़ी सिलसिला है जो दक्षिण की ओर से ऊपर की तरफ़ फैला हुआ है। इस का मौसम सामान्य है बारिश अधिक और घास बहुत होती है। इसमें बहुत सी आबादियाँ और गाँव फैले हुए हैं। यही वह पर्वत है जो प्राचीन अरबों में तै के दोनों पर्वतों अथवा अजा और सलमा के नाम से याद किया जाता है। इसे अब शम्मर कहने लगे हैं। जो कबीला तै ही की एक नई शाखा का नाम है।

2 दक्षिणी रेगिस्तान है जो समावा से मिला हुआ फैलता चला गया है। ये पूरब की ओर फारस की खाड़ी तक पहुँच जाता है। इस का पचास हजार वर्ग मील है। यह ज़मीन अधिकतर बराबर और ठोस है। जहाँ पत्थर फैले हुए हैं और रेत के तुफान उठते रहते हैं बारिश जब अपने मौसम पर हो जाती है। तो यहाँ पर घास और हरियाली सी हो जाती है। बद्दू लोग अपने ऊँटों, बकरियों और औरतों को लेकर इधर निकल आते हैं। लगभग तीन माह यहाँ निवास कराते और अपने जानवरों को चराते और उनके दूध पर गुजर करते हैं। गर्मी आते ही घास सूख जाती है और बद्दू लोग अपने देश को वापस चले जाते हैं। इस हिस्सा में अधिकतर कहतसाली रहती है। कहीं– कहीं वृक्ष बन और खजूरों के झूण्ड होते हैं। अरबों ने इस रेगिस्तान के अनेक नाम रख छोड़े हैं। वह हिस्सा जो यमन और हजरे मोत के पूर्वी उत्तरी क्षेत्र में स्थित है उसे "सैहद" कहते हैं। जो हिस्सा हजरे मोत के मध्य में स्थित है उसे "अहकाफ" कहते हैं। और जो हिस्सा "महरा" के उत्तर में स्थित है उसे "दहना" कहते हैं। मगर आजकल इस पूरे रेगिस्तान को रूबउल्खाली के नाम से याद किया जाता है।

3 जले हुए काले पर्वत (हररात) हररा जैसा कि याकूत के शब्दकोश में है। सियाह झाऊँ वाली जगह को कहते हैं। ये भुरभुरे पत्थर होते हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें आग में जला दिया गया हो। ये जले हुए काले पर्वत हुरान के पूर्वी क्षेत्र से लेकर मदीना मुनव्वरा तक फैलते चले गये हैं। यहाँ तक कि खुद मदीना मुनव्वरा हररो के बीच स्थित है। अरब की खाड़ी में इस किस्म के हररे अधिकतर हैं। जिन में से याकूत ने अपनी शब्दकोश में तकरीबन उन्तीस हररे सम्मलित किय है। इन में से अधिक प्रसिद्ध हिरा व रक्म है। यही वह हररा है जिससे हररा घटना प्रसिद्ध है देश की प्राकृतिक दशा ने अरब वासियों में कुछ ऐसी विशेषताओं को जन्म दिया जो उन्हें दूसरे देशों से अलग करती है और हम यह कह सकते हैं कि यदि अरब की भौगोलिक परिस्थितियाँ ऐसी न होती तो वहाँ के रहने वालों के जीवन का ढंग कुछ और ही होता।

प्राकृतिक कारणों से अरब देश दो मुख्य भागों अर्थात उत्तरी और दक्षिणी अरब में बंटा हुआ है। उत्तर का अधिकतर भाग रेगिस्तान है जबकि दक्षिणी अरब की जलवायु अच्छी है और यहाँ नखलिस्तान तथा कृषि योग्य भूमि अधिक है जिसमें विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है। P.K. Hitti लिखते हैं–

ARABIA is the south-western peninsula of Asia, the largest peninsula on the map. Its area so 1,027,000 square miles holds an estimated population of only fourteen millions. Saudi Arabia, with an area (exclusive of al-Rab al-Khali) of 597,000 squre miles, claims some seven millions; al-Yaman five millions; al-Kuwait, Qatar, the trucial shaykhdomas, 'Uman and Masqat, Aden and the Aden protectorate the rest.

शेष पृष्ठ 6

बच्चों को मार से नहीं प्यार से पढ़ाएं

- हबीबुल्लाह आज़मी

पूराने ज़माने से ही छड़ी को छात्रों को शिक्षा दीक्षा देने के लिए एक मात्र साधन समझा जाता रहा है जिस के आगे शरीर से शरीर और शरीफ से शरीफ तर बच्चे को सिरझुकाना पड़ता था। छड़ी के प्रयोग से अधिक हानिकारक और नकारात्मक पहलू बच्चे की शख्शियत पर प्रभाव डालना है। देखा गया है कि बार–बार की पिटाई से बच्चा मार खाने का आदी हो जाता है। फिर मार उसके लिए शर्म और लज्जा की चीज़ नहीं रह जाती। मारपीट से बच्चे में हटधर्मी चिड़चिड़ापन, नफरत, कहना न मानने की बुरी आदतें पैदा हो जाती है। यही नहीं बल्कि बदला लेने की भावना से ग्रस्त होकर मारपीट पर भी उतर आते हैं। फिर ऐसे अध्यापकों और सरपरस्तों की बातें मानना तो दूर की बात है उस को सुनने के लिए भी तैयार नहीं हो पाते। कुछ बच्चे तो इतने भावुक होते हैं कि पिटाई के कारण मॉसिक तनाव से ग्रस्त होकर पढ़ना ही छोड़ बैठते हैं और बहुत से बच्चे पिटाई के डर से फरार और लापता हो जाते हैं। फिर उनकी तलाश और खोज में माता–पिता को परीशान होना पड़ता है। कभी–कभी बच्चा छड़ी के अनुचित प्रयोग से घायल भी हो जाता है और इस प्रकार वह अध्यापक और माँ–बाप के लिए दर्दे सर बन जाता है। इस का प्रभाव बच्चे के शारीरिक व मॉसिक विकास पर भी पड़ता है कुन्दजेहन और कक्षा हिफ्ज के यतीम और निर्धन बच्चे मारपीट से घबरा कर एहसासे निराश का शिकार हो कर पढ़ने से घृणित इस लिए भी हो जाते हैं कि उन की नजर में कोई उन से हमदर्दी करने वाला और उन के आँसू पोछने वाला नहीं होता। ऐसे बच्चों को मारने पीटने से बचा जाए तो बाद में पछताना न पड़े। ऐसे निर्धन और यतीम बच्चों के साथ माँ–बाप जैसा प्यार व मुहब्बत देनी चाहिये। कुछ जगहों पर मदर्सों में "मार नहीं प्यार" के बोर्ड भी लगा दिये गये हैं जिस से सुधार हो रहा है। बच्चों को इस ज़माने में मारना पीटना नकारात्मक तो होता है लाभकारी नहीं होता।

चूंकि अध्यापक और विद्यार्थी का सम्बन्ध शालीन मजबूत और स्नेहपूर्ण होता है इसलिए अध्यापक की तरफ़ से प्रेम और मुरौव्वत का प्रदर्शन विद्यार्थी को प्रसन्नता और गर्व और हौसला दिलाता है। कुछ अध्यापकों का भय इस कदर होता है कि बच्चे कक्षा में जबान खोलने और पाठ में कुछ पूछने का साहस नहीं कर पाते। ऐसी हालत में शिक्षा प्राप्त करने में पुखतगी नहीं हो पाती। गुस्सा वैसे भी अत्याचार और अन्याय को बढ़ावा देता है। इसलिए क्रोध

- अब्दुल करीम इफतिखार

की हालत में बच्चे से नर्मी और जहाँ तक हो सके नसीहत से काम चलाएं। डाँटडपट से सुधार न हो तो जाँच परताल के बाद सजा उसके मिजाज और बर्दाश्त के अनुसार ही दें। छोटी मोटी गलतियों को जहाँ तक हो सके माफ कर दें। सजा देने में बहुत सावधानी से काम लें बल्कि ऐसी चीजों को चुने जिस से बच्चे को कम से कम तकलीफ पहुँचे। सजा देते समय बच्चों के नाजुक भागों, सिर, कान, नाक, आँख, चेहरे के बचाव का ख्याल रखें। बच्चों को पहले उसकी गलती का एहसास दिलाएं। आगे इस प्रकार की गलती न करने का वादा लें।

अध्यापक बच्चों की अस फलता तथा कमी का सब लोगों के सामने मजाक न उड़ाएं, ताना देने से भी बचना चाहिये। ऐसे नाम से न पुकारें जिस को वह पसन्द न करता हो। इस से बच्चे की भावनाओं को ठोस पहुँचती है जो उसे बगावत करने पर उकसाती है। नर्म व गर्म शैली में बच्चा बातों को खूब समझता है। कड़वी और अनुचित बातें सुन कर बच्चा क्या बड़े लोग भी भड़क उठते हैं। इसलिए अध्यापक गण बच्चों के साथ कठोरता और कड़वी बातों से बचे। बात–बाता पर नाराज होने वाले अध्यापकों को बच्चे अच्छी नजर से नहीं देखते। **शेष पृष्ठ 29**

प्रतिष्ठा मानवता की

समाज सुधार

- शैख़ शर्फ़ुद्दीन यहया मुनेरी (रह०)

- एम० हसन अंसारी

" मेंरे भाई!-मिट्टी पानी का इकबाल कुछ कम नहीं और आदम और आदमियों का मर्तबः मामूली नहीं। गगन व घरा, पाटी व कलम, आसमान व ज़मीन सब इन्सान ही के तुफैल में हैं। उस्ताद अबू अली दक्काक़ फरमाते हैं कि अल्लाह ने आदम को अपना खलीफ़ा कहा। हज़रत इब्राहीम अ0 को खलीलुल्लाह का लक़ब दिया, और हज़रत मूसा के लिये इरशाद हुआ कि मैं ने तुम को अपने लिये चुना, और मोमिनी के लियें इरशाद है 'जिसने मुझे चाहा मैं ने उसे चाहा।' लोगों ने कहा है कि यदि इस प्रेम कहानी को दिलों से मुनासिबत होती तो दिल, दिल कहलाने का पात्र न होता, और अगर प्रेम का सूरज आदम और उस की औलाद के जान व दिल को प्रकाशमान न करता, तो आदम का मामला भी दूसरे प्राणियों की तरह होता।"

"आब व खाक का मर्तबः बुलन्द है। और हिम्मत बड़ी। हरचन्द भूख–प्यास, गदायी व बेनवाई (दरिद्रता) इस के खमीर में दाखिल हैं, लेकिन जब अमानत का सूरज चमका, फरिश्तों ने जो सात लाख साल से जप कर रहे थे, अपनी मजबूरी जताई, और इस जिम्मेदारी को उठाने से असमर्थता ज़ाहिर की, आसमान ने कहा मेरी सिफत ऊँचाई है, ज़मीन ने कहा कि मेरा जामा भू–तल है, मैं घरा की धूल हूँ, पहाड़ ने कहा कि मेरा नसब पहरादारी और एक पैर पर खड़ा रहना है, जवाहरात ने विनती की कि कहीं हमारे शीशे में बाल न आ जाए, इस बेबाक दरिद्र की खाक के कण ने भुखमंगी की आस्तीन से विनम्रता का हाथ निकाला और अमानत के इस बोझ को सीने से लगा लिया और दोनो लोक में से किसी चीज का गम न किया। इसने कहा मेरे पास क्या है जिस को छीन लेंगे। जब किसी चीज को अपमानित करना चाहते हैं मिट्टी में मिला देते हैं, मिट्टी को किस में मिलायेंगे। मर्दानावार बढ़ा और उस बोझ को जिस को सात आसमान व ज़मीन न सहार सके हंसी खुशी उठा लिया और 'क्या कुछ और है' का नारा लगाया।"

"प्रेम के पंछी को आदम के सीने के अलावा कोई ठिकाना न मिला। आसमान की बुलन्दी और अर्श व कुर्सी के फैलाव से गुजरता हुआ उस ने प्रेमी के दिल को अपना नशेमन बनाया।"

आब व खाक (पानी व मिट्टी) को कम न समझो, जो कुछ कमाल हैं पानी व मिट्टी ही के अन्दर हैं, और जो कुछ इस दुनिया में आया है पानी व मिट्टी ही के साथ आया है। इस इस के अलावा जो कुछ नजर आता है, दीवार पर बनी हुई तस्वीर से ज्यादा नहीं। कहने वालों ने कहा कि प्रेम के पंछी ने इबरत के आशियाने से (सीख के पड़ाव से) उड़ान भरी, अर्श के पास से गुजरा, ऊँचाई देखी गुजर गया, कुर्सी पर पहुँचा, विशालता देखी गुजर गया आसमान पर पहुँचा बुलन्दी आगे बढ़ गया, खाक पर पहुँचा, मेहनत देखी उतर आया।"

ऐ भाई! सृष्टा का इस पानी व मिट्टी के साथ खास मामला और खास कृपादृष्टि हैं। एक बयान में आया है कि जब मौत का फरिश्ता इस उम्मत में से किसी की रूह को कब्ज़ करता है तो रब उस से कहता है कि पहले मेरा सलाम पहुँचाना फिर रूह कब्ज़ करना। तुम ने कुर्आन में पढ़ा होगा कि कियामत के दिन अल्लाह ने वास्तः मोमिनों को सलाम कहेगा। जिस तरह लाइलाह इल्लल्लाह, उस की वाणी अनादि कालीन है, उस का सलाम भी अनादि कालीन (अज़ली) है। अगर इस मुट्ठी भर धूल के साथ यह प्राचीन कृपा दृष्टि न होती तो अजल में इंस को सलाम भी न किया जाता।"

"अल्लाह तआला ने अट्ठारह हजार आलम में से कोई गिरोह इन्सानों के गिरोह से अधिक आली

हिम्मत नहीं पैदा किया, और इन्सानों के अलावा किसी गिरोह के बारे में इरशाद नहीं हुआ कि–

"और किसी गिरोह में पैगम्बरों को नहीं भेजा और न आसमानी किताबों उतारीं, इौर न किसी गिरोह को सलाम कहलाया न किसी गिरोह को अपने दीदार का वरदान दिया। वह आदमी ही थे जो अपने प्रेम की शक्ति और अपनी हिम्मत की बुलन्दी की वजह से जुदाई की ताकत नहीं रखते थे। दुनिया में उन के दिल से पर्दा उठा लिया। इसी का नतीजा थे। दुनिया में उन के दिल से पर्दा उठा लिया। इसी का नतीजा है कि दुनिया में वह उस के सिका किसी के तालिब नहीं और परलोक में उसके शोर्य के अलावा उन की आँखों ने कुछ न देखा और यह सबक उन्होंने मकतब में पढ़ा था।"

"मेरे भाई! जिस चीज ने तुम को फरिश्तों का मस्जूद (जिस को सज्दा किया जाये) और आसमानों का महसूद (जिस पर रश्क किया जाये) बना दिया है वह बहुत बड़ी चीज है। मानव कितना भी मिट्टी का बना हो, और गन्दला करने वाला हो भावार्थ में ऐसा प्रदीप और पवित्र है कि फरिश्तों की दुनिया का असर और मनुष्य के गुमान इस की हकीकत खोज निकालने में असमर्थ हैं। जब इस भाव की किरणें बिखरती हैं, फरिश्ते हैरान और आसमान परेशान होता है, वह विनम्रता से सर झुकाये और हैबत से भयभीत।"

"आसमान बनाया, फरिश्तों के सिपुर्द किया, जन्नत बनाई रिजवान को उसका दारोगा बनाया, और दोजख पैदा की मालिक को उसका दरबान बनाया, लेकिन जब मोमिन का दिल पैदा किया, फरमाया, दिल रहमान की दो उँगलियों के बीच है।"

"और कोई चीज दिल से अधिक प्रिय और कीमती होती तो अपनी मार्फत का मोती उसी में रखता। यही अर्थ है इस इरशाद का कि न मेरा आसमान मुझे समा सकता है न मेरी ज़मीन, अगर मेरे लिये गुंजाइश है तो मोमिन बन्दे के दिल में। आसमान मेरी मार्फत का अहल नहीं, योग्य नहीं ज़मीन न इस बोझ को नहीं उठा सकती, बन्द–ए–मोमिन का दिल ही है जिस ने इस बोझ को उठाया। रुस्तम का घोड़ा भी रुस्तम को उठा लेता है लेकिन जलाले इलाही का आफताब जब पहाड़ पर जिस से ज्यादा प्राणी जगत में ज्यादा जमने वाली और महान कोई चीज नहीं, एक बार चमका तो वह भी रेजा–रेजा हो गया, तीन सौ साठ मर्तबः मोमिन के दिल पर चमकता है और वह 'क्या कुछ और है' का नारा लगाता रहता है, ओर पुकारता रहता है 'ऐ पिलाने वाले, ऐ पिलाने वाले! प्यासा हूँ।"

"ऐ भाई! टूटी हुई चीज कोई कीमत नहीं रखती, मगर दिल जितना टूटा हुआ होता है उतना ही बहुमूल्य होता है, मूसा अ0 ने अपनी एक सरगोशी में फ़रमाया कि "आप को कहाँ तलाश करूं? जवाब मिला, 'मैं उन लोगों के पास होता हूँ जिन के दिल मेरी वजह से टूटे हुए होते हैं।"

❑❑

कुरआन की शिक्षा

(8) खुलासा यह कि मुनाफिकीन कुछ सबबों से फसाद (उत्पात) फैलाते थे और शरई अहकाम के बजा लाने में सुस्ती और उससे नफ़रत करते थे, तीसरे कुफ़्फ़ार से उन की आव–भगत करते हुए उन से मिलते थे और दीनी बातें की मुखालफत पर कुफ़्फ़ार से मुजाहमत न करते थे और कुफ़्फ़ार के एअतिराज़ात और शुबहात को जो दीन की बातों में होते थे मुसलमानों के रूबरू नक्ल करते थे ताकि कमजोर अकीदे वाले और कम समझ वाले शरई अहकाम में शक में पड़ जाए और जब कोई इन फसाद की बातों से उन को रोकता तो कहते हैं हम तो इस्लाह करने वाले हैं और चाहते हैं कि पहले की तरह पूरा मुल्क और पूरी कौम मिल जुल कर रहे और नये दीन के सबब जो मुखालफत बढ़ गई है बिल्कुल जाती रहे। चुनाचि हर ज़माने में दुन्या चाहने वाले और नफ्स की पैरवी करने वाले ऐसा ही कहा करते हैं।

❑❑

खवातीन इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

- हबीबुल्लाह आजमी

- मौ० अब्दुर्रहमान नगरामी

इस्लाम और सिनफेनाजुक (सुकुमार महिलाएं)

कहा जाता है कि इस्लाम धर्म ने महिला वर्ग के लिए विकास और सभ्य बनाने के लिए कोई प्रमुख नियम नहीं बनाए और न उन को संसार में अल्लाह के नेअमतों (वरदानों) से लाभ उठाने का कोई अवसर दिया। क्या यही सच है? कदापि नहीं ! बेशक मुसलमान औरत रुम वासियों की आस्था के अनुसार घर का ऐसा माल या जायदाद नहीं है कि मर्द उसे रेहन रख सके या बेच सके और न वह यूनानियों के धार्मिक कानून के अनुसार एक जबरदस्त शैतान है, जहाँ तक सम्भव हो उसका निरादर व अपमान किया जाय बल्कि वह संसार की व्यवस्था को कायम रखने में मर्दों के बराबर शरीक है। उसके जिम्मे नयी नस्ल की शिक्षा दिक्षा आचरण के सुधार मजहबी पाबन्दी को सुदृढ़ बनाने का महत्वपूर्ण कर्तव्य है। चुनानचि आगे चल कर हम इसके सम्बन्ध में स्पष्ट व्याख्या पेश करेंगे। बहुत मुर्ख अपनी तंग नजरी (संकीर्ण विचार) के कारण औरतों के इस पिछड़े पन को इस्लामी तालीम का नतीजा समझते हैं। क्या यह सच है और सचमुच इस्लाम पर यह आरोप सही है?

असलीयत यह है कि हमारे मुल्क में रीत–रिवाज के बन्धन ने कुछ इस प्रकार की सूरत पैदा कर दी है और इन पर सखती के साथ पाबन्दी का कुछ ऐसा रंगव रोगन मिलाया गया है कि सरसरी नजर से देखने में इन के धार्मिक आदेश होने का धोका होता है हालाँकि असलीयत इसके विलकुल खिलाफ होती है। औरत के इस पिछड़े पन की उम्र अधिक से अधिक दो सदी की हो सकती है अन्यथा अगर भारत के इतिहास पर गौर करें तो सैकड़ों महिलाएं वीरता बहादुरी, युद्ध कला, ज्ञान के आभूषण से सुसज्जित मिलेगी।

बहुत दिन हुए मिस्र की एक मशहूर पत्रिका ''असमनार'' में ''अलमरातुल इस्लाम'' की शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था जिस में स्त्रियों के अधिकार का सक्षिँप्त इतिहास दर्ज था। इस के देखने से अन्दाजा होता है कि पुराने युग में यूरोप, एशिया के लगभग हर भाग में और कौम में औरत एक तुच्छ और पिछड़े दर्जे की प्राणी समझी जाती थी। अरब के बाज कबिलों में लड़यिकों की हत्या की जो रस्म जारी थी वह इसी विचार का नतीजा था कि लड़की का होना उनके लिए उन के बराबर वालों में शर्म लज्जा की बात थी। उस समय भूमण्डल का कोई भाग ऐसा न था जिस में इस असाहय प्राणी के अधिकार को बेदर्दी के साथ रौंदा न गया हो। इस्ला की संजीवनी ने इस मुर्दा शरीर में जो रुह ञली उसका अन्दाजा तुम हज़रत उमर (रज़ि0) के इस कौल से कर सकते हैं –

(अनुवाद ''इस्लाम आने से पहले इस्लाम ने आ कर हमें इस लापरवाहीं से जगया। अल्लाह ने अपने कलाम में इस का जिक्र किया तब हम ने समझा कि उन के भी हमारे जिम्मे कुछ अधिकार हैं)

इन तमाम विचारों में यह स्पष्ट है कि इस्लाम के पहले अरब देशों में औरतों के सम्बन्ध में क्या विचार धरी थी और इस से यह भी मालूम होता है इस्लाम ने औरतों के अधिकारों में न केवल बढ़ोतरी बल्कि उन के अधिकारों में एक नया अध्याय खोल दिया। हम ने ऊपर बताया है कि शरीअते इस्लामी (इस्लामी कानून) ने सामाजिक व्यवहारों को पूरा करने में औरत और मर्द दोनों को बराबर के अधिकार दीयें हैं और खानदान और औलाद की अच्छाई और बुराई का दोनो को जिम्मेदार ठहराया है।

हमारे इस दावे की दलील हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि0) के इस कथन से मिलती है (अनुवाद – मर्द अपनी औलाद का चरवाहा बनाया गया है और खाविन्द (पति) के घर को संभालने वाली है और उस से उस के सम्बन्ध में पूछताछ की जायेगी) उन्हीं के दूसरे कथन में एक और शब्द को जोड़ा गया है – (अनुवाद – अर्थात औरत खाविन और औलाद की जिम्मेदार है)

रसूल्लल्लाहु (सल्ल0) अरब और अजम (पूरी दुनिया) के उत्तम सुभाषी थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की असली शान यह थी कि आप को बहु अर्थी शब्द प्रदान किये गये थे। आज हमारे यहाँ औरतों के बारे में कितनी बहस छिड़ी हुई है। औरों को छोड़ो उनकी शिक्षा के बारे में कितना विवाद है लेकिन इस संक्षिप्त शब्द ने इन तमाम विवादों का फैसला कर दिया। जब औरतें घरेलू कार्यों से अनजान रहेंगी तो वह कैसे शौहर (पति) के घरबार की देख रेख कर सकती है। जब तक औरतें शिक्षित न होंगी, दूसरे कला कौशलों की जानकार और स्वास्थ नियमों की काफी जानकारी न रखेंगी तो क्या खाक अपनी औलाद की सुरक्षा, सुधार और पालन पोषण का काम पूरा कर सकेंगी। अगर ऐसा है तो वह लोग जो औरतों को शिक्षा के विरोधी हैं, इस आदेश के बाद क्या पैगम्बरे खुदा (सल्ल0) से जवाब देही के लिए तैयार हैं? चरवाहे के शब्द से जो अहमियत पैदा हुई है वह ज़ाहिर है। हज्जतुइस्लाम हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी (रह0) ने जो शरीअत की बारिकी के जानकार और एक बड़े मार्गदर्शक हैं इसरारे निकाह में इसी अधिकारों की बराबरी को बयान किया है। वह फरमाते हैं कि –

"इन्सान के स्वाभाविक और जरूरी आवश्यकताएं दो तरह के हैं। कुछ ऐसे हैं कि जिन को वह खुद पूरा कर सकता है और कुछ ऐसे हैं जिन के पूरा करने में औरत की आवश्यकता है (ऐसा ही औरत का भी हालत है) इसी लिए शरीअत ने निकाह को जरूरी करार दिया है।"

दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि औरत इन्सानियत को मुकम्मल करने वाली मखलूक (प्राणी) है और यही वजह है कि एक हदीस में कहा गया है– (अनुवाद – जब किसी शख्स से निकाह कर दिया तो मानो उसने अपनी दीन मुकम्मल कर लिया)

क्योंकि इन्सानी कर्मों के दो प्रकार है। एक वह कर्म और कार्य जिन का सम्बन्ध प्रलोक से है और दूसरे वह जिन का सम्बन्ध समाजिकता और दुनिया से है। निकाह होने के बाद मानो समाजिकता की एक तरह से पूर्ति हो जाती है। कुरआन मजीद की बाज आयतें इस हैसियत को और भी साफ और स्पष्ट करती हैं जैसे इर्शाद है (उपदेश है) (अनुवाद – वह (औरतें) तुम्हारे लिए लिबास (वस्त्र) हैं और तुम उन के लिए लिबास हो) लिबास इन्सान के लिए एक जरूरी चीज है और प्रायः लोग दूसरी चीजों की तुलना में इसके सजाने और संवारने में अधिक ध्यान देते हैं। इसीलिए कुर्आन मजीद ने मर्द और औरत की हैसियत को स्पष्ट करते हुए लिबास शब्द का प्रयोग किया है कि तुम में हर एक, एक दूसरे के लिए लिबास है। इसलिए मर्द और औरत दोनों का कर्तव्य है कि एक दूसरे के बनाव सिंगार में प्रयास करें। एक दूसरे स्थान पर मुख्यतः औरतों की हैसियत को उससे भी अधिक बेहतर दिखाया गया है। (तुम्हारी औरतें खेतियों के समान हैं जिस तरह चाहो उन के पास आओ) यद्यपि यह आयत टीकाकारों (मुफसिरीन) के कथन के अनुसार एक मुख्य घटना की तरफ संकेत करती है लेकिन व्याख्या का साधारण सिद्धाँत यह है कि किसी खास घटना की तरफ संकेत से उसे समान्य घटनाओं से नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। इस आयत में औरतों को खेती से मिसाल दी गई है जो एक अतियंत प्रिय और लाभदायक चीज है।

कोई किसान अपनी खेती को नष्ट करना नहीं चाहता, इसी तरह मर्दों को सम्बोधित किया गया है कि तुम को अपनी औरतों के साथ वही व्यवहार करना चाहिये जो किसान अपनी खेती के साथ करता है। यह कुर्आन की खास शैली है।

क्या इस से भी बढ़कर हुस्ने मआशरत (अच्छी समाजिकता) की कोई और तालीम दी जा सकती है। इन दोनों का अर्थ लगभग एह है लेकिन शब्द विभिन्न हैं। इसमें भी एक खास बारीकी है बयान करने से पहले एक और बात समझ लेनी चाहिये।

कुर्आन मजीद में सामन्यतः आदेशों का सम्बोधन अरब के लोगों से है और अधिकाँश उन्हीं के सुधार को वरीयत दी गई है तो पहले एक कौमम को राह पर लाया जाये और फिर उसके द्वारा दूसरी कौमों का सुधार किया जाय, इस के लिए अरब कौम, को चुना गया क्योंकि उनका देश भौगोलिक दृष्टकोण से भूमण्डल के मध्य में है। इसलिए और आदेशों की तरह औरतों के अधिकारों की तरफ़ पहले उन्हीं को सुधार की दावत दी गई। अरब में दो प्रकार के लोग आबाद थे। एक वह जो एक स्थान पर नहीं रहते थे विभिन्न स्थानों पर रहते, खेतियाँ करते फसल काटते और दूसरी तरफ़ चले जाते। दूसरे वह लोग जो शहरों में बसते थे। उन का सामान्य रोजगार व्यापार था। स्पष्ट है कि पहले गिरोह के लिए खेती बाड़ी से अधिक कोई चीज प्रिय नहीं थी। दूसरे लोगों के लिए ज़ाहिरी साज सज्जा खास चीज है जिसका उत्तम अंश लिबास है। कुर्आन मजीद इन्हीं दो गिरोहों को सम्बोधित करता है। इन्हीं दो गिरोहों को औरतों की जबरदस्त हैसियत समझाने और उनके दिलों में औरतों का सम्मान पैदा करने के लिए दो विभिन्न मिसालों से काम लिया गया है और लिबास (वस्त्र) और हर्स (खेती) के दो अलग–अलग शब्द प्रयोग किये गये हैं। पहले से स्थाई दूसरे से खाना बदोशों से तातपर्य है। इसी दावे को मानने के बाद हम चन्द चीजों को विस्तार से बताना चाहते हैं जिन के सम्बन्ध में हम पिछले पन्नों में संकेत कर आए है।

हज़रत उमर के कथन से तुम ने अन्दाजा कर लिया होगा कि अरब के लोग औरतों का सम्मान नहीं करते थे और उन के लिए औरतों की अधिकार अधिक वही हैसियत दे सकता था जो एक इन्सान अपने सेवक या अधिनस्त की होती है और उन के सम्बन्ध में शौहरों (पतियों) को वही अधिकार मिलते थे जो दूसरी आर्थिक वस्तुओं पर हसलि होते थे लेकिन इस्लामी शरीअत ने हर जगह औरतों के साथ अच्छे व्यवहार और उनके सामाजिक सम्मान और अच्छी तरह पेश अपने की तालीम देते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया है कि औरत पर तुम को वही अधिकार प्राप्त है जो इस्लामी कानून ने दिये हैं। चुनानंचि इब्ने माजः का कथन है –

अनुवाद : तुम को औरतों पर मुख्य अधिकारों के अतिरिक्त कोई शक्ति (दस्तरस) नहीं प्राप्त है लेकिन हाँ जब कुई गुनाह करें।

(ज़ारी...)

बच्चों को मार से नहीं.....

बल्कि रोब, भय और आदर जो उन के दिल में होता है वह भी समाप्त हो जाता है। शिक्षा विशेषज्ञ और बच्चों की मानसिकता के जानकारों का अनुभव है कि बच्चे को लम्बा पाठ या ऐसा कोई काम न सौंपा जाय जो उस की क्षमता से परे हों। छुट्टियों में भी पढ़ने में लीन रखा जाये। छोटे बच्चों को शिक्षा में रुचि बरकार रखने के लिए उन की प्रशंसा भी की जाये, लतीफ़े और हंसाने वाली कहानियाँ सुनाई जायें। एक बच्चे की दूसरे बच्चे से तुलना न की जाये। बच्चों के सामने अध्यापक अपना व्यवहार तथा आचरण में एक नमूना बन कर रहें। डाँटफटकार से बरी होनी चाहिये। बच्चों की मामूली शरारत को भी धैर्य से अनधेखी कर देनी चाहिए।

अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया "माता–पिता अपने बच्चों को जो सब से बेहतरीन उपहार व वरदान दे सकते हैं वह है अच्छी तर्बियत।"

वर्तमान समय में बच्चों को अच्छी तर्बियत बिगडे हुए माहौल में बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए माँ–बाप और अध्यापक नर्मी और कूटिनीति से काम लें। औलाद माँ–बाप तथा योग्य छात्र अध्यापक के लिए अल्लाह की नेअमत और देश व समाज की बहुमुल्य पूंजी हैं।

अल्लाह तआला हमें इस नेअमत व सरमाया (पूंजी की कद्र व कीमत पहचानने की और मन व आचरण सम्बन्धी शिक्षा व दीक्षा करने की क्षमत ओर सही समझ प्रदान करें।

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

पिछले अंक से आगे.....

— अबु जफर नदवी

नूरुद्दीन जहाँगीर बादशाह

1605 ई0 (1014हि0) में अकबर का लड़का सलीम नूरुद्दीन जहाँगीर के लकब (पदवी) से तख्त पर बैठा। जहाँगीर का बड़ा लड़का खुसरो जो अपने दादा अकबर के ही समय से बादशाह बनना चाहता था निराश होकर पंजाब की ओर भागा। शेख फरीद बुखारी ने पीछा कर के बन्दी बनालिया और फिर इसी हालत में ही उसकी मृत्यु हो गई।

1614 ई0 (1023हि0) में जहाँगीर के लड़के शाहजादा खुर्रम ने, जिस ने आगे चल कर शाहजहाँ का लकब इख्तियार किया, राना उदय पुर को अर्धान बना कर दरबार में ले आया। 1625 ई0 (1035हि0) में खुर्रम ने दकिन पहुँच कर अहमदं नगर की पूरी सलतनत पर कब्जा कर लिया। 1620 ई0 (1030हि0) में मलिन्द अंबर हबशी, जो निज़ाम शाही का सेना पति था, बगावत की। चुनानंचि बादशाह खुद तो कशमीर चला गया परन्तु शाहजादा खुर्रम को मलिक अंबर के दमन के लिए दकिन भेज दिया। शाहजादे ने मलिक अंबर को आजिज करके सुलह पर मजबूर कर दिया।

उसी साल ईरानियों ने कन्धार ले लिया। जहाँगीर ने खुर्रम को कन्धार की वापसी के लिए आदेश दिया। खुर्रम को सन्देह हुआ कि नूरजहाँ कन्धार भेज कर सिंहासन से वंचित कर देना चाहती है। इसलिए वह फौज लेकर आगरा की तरफ़ बढ़ा। सिपहसालार महाबत खाँ ने लड़ाई कर के शाहजादे को पराजित किया। परन्तु बड़ी कठिनाई यह आपड़ी कि खुद महाबत खाँ का प्रभाव दरबार में बढ़ गया, जो शहजादा परवेज से सहानभूत रखता था। नूरजहाँ ने उस काँटे को भी निकालना चाहा। महाबत खाँ एक अक्खड सिपाही था। नूरजहाँ का विरोधी मालूम होने पर पाँच हजार सिपाहियों के साथ आ पहुँचा और अवसर देख कर 1625 ई0 (1035हि0) में बादशाह को नजरबन्द कर लिया।

कुछ दिनों के बाद महाबत खाँ के फौजी सिपाही आपस में लड़ पड़े और इस हलचल में लोग बादशाह को भी नजरबन्दी से निकाल लाए। नूरजहाँ ने खुर्रम की गिरिफ्तारी की शर्त पर महाबत खाँ को माफी दी लेकिन महाबत खाँ खुर्रम से मिल गया। उसी साल 1626 ई0 शाहजादा परवेज का दकिन में देहाँत हो गया। उस ज़माने में इंग्लैण्ड के बादशाह जेम्स प्रथम की तरफ़ से सर टामस रौ दूत बन कर जहाँगीर के दरबार में हाजिर हुआ। जहाँगीर ने केवल पुर्तगीजियों का जोर तोड़ने के लिए इस प्रकार का ओदश अंग्रेज दूत का प्रार्थना पर दे दिया कि अंग्रेजों के माल पर कर न लिया जाए।

जहाँगीर हिन्दुस्तान के बादशाहों में सबसे अधिक खुशमजाक था। उस को प्राकृतिक चीजों से बड़ी दिलचस्पी थी। विभिन्न वस्तुएं इकट्ठा करता था। तरह–तरह के जानवरों का आजाएब खाना भी उस के पास था। वह बाबर की तरह इल्मी जौक (वैज्ञानिक रुचि) भी रखता था। तुज्क जहाँगीरी उसी क़ा रोज नामचा है। उस की बेगम नूरजहाँ भी बड़ी इल्म दोस्त थी। शृंगार (आरईश) की नई–नई चीजों की इजाद का उस को बड़ा ख्याल रहता था। गुलाब का इत्र पहले उसी ने खिचवाया और चान्दनी का फर्श पहले उसी ने बिछवाया।

शहाबुद्दीन शाहजहाँ बादशाह

बाप के बाद 1627 ई0 (1036हि0) में शाहजहाँ के नाम से खुर्रम हिन्दुस्तान का समराट हुआ। तीन वर्ष के बाद दकिन के हाकिम खान जहाँ लोदी ने बगावत की जो आखिर मारा गया। आजम खाँ, आसिफ खाँ और महाबत खाँ जैसे बड़े बहादुर मुगल सेनापतियों ने दकिन पर हमला कर के सारे दकिन में हलचल डाल दी साथ ही भुखमरी और महामारी ने हजारों लाखों को तबाह व बरबाद कर डाला। 1631 ई0 (1041 हि0) में दौलताबाद और अहमदनगर की सल्तन पूर्ण रूप से मुगल राज्य में

शामिल कर दी गई। 1635 ई0 (1045 हि0) में दकिन के विद्रोह को दबाने के लिए खुद बादशाह दौलताबाद पहुँचा। गोल कुण्डा और बीजापुर के बादशाहों को आज्ञाकारी बनने का प्रलोभन दिया गया। बीजापुर का बादशाह ने इन्कार पर लड़ाई शुरु कर दी गई। आखिर आदिलशा बेबस होकर सालाना कर देने पर राजी हो गया और मुगल फौज वापस चली आई। शाहजादा औरंगजेब 1636 ई0 (1046 हि0) में दकिन का सूबेदार नियुक्त हुआ।

हुगली में अंग्रेजों ने व्यापारिक कोठी को किला बना डाला। बंगाल के सूबेदार ने उनको चेतावनी दी मगर अपनी तोपों के भरोसे पर उन्हों ने इस की परवाह न की। मजबूर होकर बादशाह के आदेश से बलपूर्वक किला उनेसे छीन लिया गया। 1637 ई0 (1047 हि0) में अली मर्थन खाँ जो ईरान के बादशाह की तरफ़ से कन्धार का हाकिम था नाराज होकर शाहजहाँ के पास चला आया और कन्धार मुगलों के हवाले कर दिया। 1647 ई0 (1055 हि0) में बलख और बदखशाँ पर मुगलों के विभिन्न सेनापतियों ने बार–बार हमले किये परन्तु सफलता न मिली।

1656 ई0 (1067 हि0) में शाहजहाँ सख्त बीमार हो गया। सल्तनत की बाग डोर उस के बड़े लडके शाहजादा दाराशकोह के हाथ में आ गई। उसने अपने भाइयों को बाप की बीमारी से बेखबर रखने की कोशिश की। इस का नतीजा यह हुआ कि इन लोगों को शाहजहाँ के मरजाने का यकीन हो गया। हर भाई अपनी–अपनी फौज लेकर आगरा की ओर रवाना हुआ। जब दाराशकोह को इसकी सूचना मिली तो अपने लड़के सुलैमान शकोह को शाहजादा शुजा के मुकाबले पर भेजा जिसने बनारस में शुजा को पराजित किया। और राजा जसवंत सिंह को मुराद और आलमगीर के मुकाबले में रवाना किया। राजा परांजित होकर अपने देश मारवाड़ भाग गया। दारा शकोह इस घटना से बड़ा बोखलाया। शाहजहाँ खुद सुलह करा देने के लिए जाना चाहता था लेकिन दाराशकोह ने न जाने दिया और एक बड़ी फौज लेकर तुरंत रवाना हुआ। आगरा के निकट मुकाबला हुआ। दाराशकोह पराजित होकर भाग निकला और आगरा आलमगीर का कब्जा हो गया।

आलमगीर ने अपनी कुशलता और रक्षा के लिए शाहजहाँ को आगरा के किले में नजर बन्द कर दिया। सात साल के बाद यह बूढ़ा बादशाह दुनिया से चलबसा। उसके ज़माने में बड़ी–बड़ी इमारतें बनी जिन में दिल्ली का लालकिला और जमामस्जिद, लाजवाब इमारतें हैं। आगरा का ताजमहल दुनिया के अदुत वस्तुओं में गिना जाता है। शाहजहाँ के ज़माने में हिन्दुस्तान का राजस्व कर साढे सैंतीस करोड़ था। आमदनी की यह उन्नति सल्तनत के शान्ति की दलील है जिस के कारण उसका युग स्वर्णयुग कहा जाता है।

मुहीयुद्दीन औरंगजेब आलमगीर

औरंगजेब राजधानी में दाखिल नहीं हुआ बल्कि दारा शकोह के पीछे लाहोर जाना चाहता था जहाँ दारा शकोह एक बड़ी फौज तैयार कर रहा था मगर मुराद के मित्रों ने मुराद को विद्रोह की सलाह दी। मजबूरन आलमगीर ने उसको कैद कर दिया फिर लाहोर की तरफ़ कूच किया। दारा शकोह यह सुनकर मुलतान चला गया। आलमगीर रास्ते ही से मुलतान की तरफ़ मुड़ गया। दारा शकोह को भी इस की सूचना मिल गई। वह मुलतान से सिन्ध जा पहुँचा। आलमगीर ने दो तीन अधिकारियों को दाराशकोह से लड़ने के लिए रवाना किया और खुद दिल्ली वापस आया।

यहाँ उस को मालूम हुआ कि शाहजहाँ और दारा शकोह के कहने से शाहजादा शुजा समझौते को तोड़ कर बनारस तक आ गया। आलमीगर उसको रोकने के लिए तुरंत चल पड़ा। इटावा के पास दोनों फौजों का मुकाबला हुआ। राजा जसवन्त सिंह जिस की पहली गलती को क्षमाकर के आलमगीर ने अपनी फौज में शामिल कर लिया था। अचानक वह रात को दुशमन से मिल गया और बादशाही खेमों को लूटता हुआ चल दिया। शुजा को अपने जंगी हाथियों और बारमा के सैयदों, जो बड़े बहादुर और जंग का अनुभव रखते थे, बड़ा घमण्ड था मगर औरंगजेब दिल्ली चला आया और मीर जुमला सेनापति को शुजा के पीछे रवाना किया। उसने शुजा

को बंगाल से निकाल दिया और कूच बिहार आसाम, जलगाम फतह कर के मुगल राज्य में मिला लिया। शुजा बरमा पहुँचा जहाँ से पीगू (बरमा की राजधानी) जाना चाहता था कि बरमा के राजा से रास्तें में लड़कर मारा गया।

दारा शकोह सिन्ध से "कच्छ" होते हुए गुजरात पहुँचा जहाँ के एक जमींदार मलिक जीवन ने इस को गिरफ्तार कर के आलमगीर के पास भेज दिया और वह कत्ल कर दिया गया।

1658 ई0 (1069 हि0) में आलमगीर ने अपने सिरपर हिन्दुस्तान की बादशाही का ताज रखा। अमीरों को उपाधि (खिताब) और इनाम मिले, गरीबों को बेहिसाब दान दिया गया। 1662 ई0 (1073 हि0) में कशमीर के हाकिम ने छोटा तिब्बत फतह कर लिया। 1669 ई0 (1080 हि0) में अफगानों ने सिर उठाया तो आगर खाँ बहादुरी से हमला कर के उन को कुचल दिया।

1979 ई0 (1082 हि0) में सत्त नामी फकीरों ने नारनोल के पास विद्रोह किया और एक दो लड़ाई के बाद दिल्ली के निकट तक चले आये। औरंजेब ने राजा बिशन सिंह और हामिद खाँ को भेजा जिन्होंने उन को पराजित कर के इस विद्रोह को समाप्त किया।

1678 ई0 (1089 हि0) में जोधपुर के राजा ने विद्रोहियों को पनाह देकर सरकशी (अवज्ञा) की। औरंगजेब फौज लेकर इस तेजी से पहुँचा कि राजा को सिवाए क्षमा माँगने के कोई चारा नजर न आया। आलमगीर दिल्ली वापस आया ही था कि राजा ने फिर बगावत की। आलमगीर उधर अजमेर आया और शाहजादा अकबर द्वित्तीय को एक सरदार तहूर खाँ के साथ जोधपुर रवाना किया। दकिन और गुजरात की फौजें भी आ गईं जिन्होंने बागियों को इस तरह घेर लिया कि उनको एक दाना भी न मिल सके। राजा, जो शाही फौज के आते ही पहाड़ों में भाग गया था, उसने बादशाह को पराजित करने का एक नया उपाय सोचा अर्थात शाहजादा अकबर द्वतीय को सब्ज बाग दिखा कर बाप से बागी बना दिया। अब शाहजादा अकबर द्वतीय खुद अपनी बादशाही का एलान कर दिया। उसके साथ राजपूत भी मिल गये। शाहजादा आगरा की तरफ़ चला लेकिन बड़े सरदार, जिन को आलमगीर दूरदर्शित (दूरअंदेशी) और दृढ़ता का हाल अच्छी तरह मालूम था, शाहजादे को छोड़ कर एक–एक करके आलमगीर के पास चले आये। अकबर द्वतीय के राजपूत दोस्तों ने जब यह देखा तो उन्होंने भी साथ छोड़ना शुरु कर दिया और आखिर शाहजादे को दकिन भागना पड़ा जहाँ से वह समुद्री मार्ग से ईरान पहुँच कर मर गया। राजा जब इस नीति में भी असफल रहा तो शाहजादा मुअज़्ज़म के द्वारा बादशाह से क्षमादान की प्रार्थना की बादशाह ने उस को क्षमा कर दिया जिस के बाद वह खुद और उसके लड़के हमेशा औरंगजेब के अज्ञाकारी रहे।

❑❑

कोशिश और तक्दीर

निकल सकता वैसे ही सिर से मेहनत न करने वाला पास नहीं हो सकता।

तक्दीर अल्लाह के भेदों में से एक भेद है इस भेद को कुरेदना अच्छा नहीं, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तक्दीर पर बहस व मुबाहसा करने से रोका है मगर उस पर ईमान रखना जरूरी करार दिया है। (मिशकात बाब ईमान बिलकद्र) साथ ही दीन के काम हो या दुन्या के अस्बाब इख्तियार करने और कोशिश करने की तालीम दी है। जैसा कि ऊपर गुजरा।

जिन लोगों ने तक्दीर के मुआमले में बेजा बहस की वह बहक गये और दो भटके हुए फिरके वजूद में आ गये "कदरीया" और "जबरीया" कदरीया कहते हैं कज़ा व कद्र कुछ नहीं जो इन्सान करता है वही होता है और जबरीया कहते हैं कि इन्सान तो मजबूर (विवश) है उस के इख्तियार में कुछ नहीं। अस्ल में यह मसअला पेचीदा है, इन्सानी अक्ल को यहाँ हथयार डालने ही में आफियत है मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूकी (रह0) ने अपनी किताब "नफह–ए–अबरीया ब जिक्रे मीलादे खैरुल बरीया पेज 6 पर लिखते हैं।

अहले सुन्नत व जमाअ़त का मजहब है कि बन्दे अपने अफआल में न पूरे तौर पर बा इख्तियार है, कि खुदा की मशीयत की तनकीस हो और न मजबूर महज़ हैं कि जज़ा व सज़ा का कारखाना दरहम बरहम हो जाएं बल्कि इख्तियार व जब्र के दरमियान की कोई हालत है जिस की हक़ीक़त समझ में नहीं आ सकती।

❑❑

रिपोर्ट इक्कीसवां अधिवेशन

ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल-लॉ बोर्ड

- इदारा

- नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल-लॉ बोर्ड के इक्कीसवें अधिवेशन के लिए कालीकट में कार्यकारिणी समिति की बैठक में जगह की बत आई तो कालीकट (केरल), औरंगाबाद (महाराष्ट्र), देहली और लखनऊ के नाम आए। मौलाना सैय्यद सलमान हुसैनी नदवी सदस्य कार्यकारिणी ने देहली या लखनऊ को तरजीह दी कि देहली हिन्दुस्तान की और लखनऊ भारत के सबसे बड़े प्रदेश की राजधानी है। जनाब ज़फ़रयाब जीलानी और डॉ0 क़ासिम रसूल इलयास ने लखनऊ को प्रमुखता देने की बात कही। जनरल सेक्रेट्री बोर्ड की राय भी यही थी। अध्यक्ष बोर्ड हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने अपने सहयोगियों से मशवरा कर के सहमति दे दी जिसका जनरल सेक्रेट्री मौलाना सैय्यद निजामुद्दीन साहब ने ऐलान कर दिया। जेहनी तौर पर तैयारियां उसी समय शुरू हो गई। अमली तौर पर लखनऊ वासी उस समय गतिशील (मुतहर्रिक) हुए जब लखनऊ आकर जनरल सेक्रेट्री ने नदवतुल-उलमा में पांच सदस्यी कमेटी गठित की और उसमें मौलाना सैय्यद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी को कन्वीनर बना कर जनाब शाहिद हुसैन (नदवा) मौलाना ख़ालिद रशीद फ़िरंगी महली (शहर लखनऊ! जनाब ज़फ़रयाब जीलानी (शहर लखनऊ) और जनाब हाजी शीराजुद्दीन (कन्वीनर इस्लाहे मुआशरा कमेटी लखनऊ) को रखा। ये पांच सदस्यीय प्रबन्ध समिति लखनऊ अधिवेशन हेतु गठित हुई। उसके कुछ दिनों बाद स्वागत समिति गठित की गई। बहुत से नामों पर विचार करने के बाद रहीमाबाद लखनऊ के जनाब मुहम्मद सुलैमान साहब को स्वागत समिति का अध्यक्ष बनाकर मौलाना सैय्यद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी को कन्वीनर, मौलाना ख़ालिद रशीद फ़िरंगी महली को जनरल सेक्रेट्री, जनाब जफ़रयाब जीलानी साहब को प्रवक्ता, जनाब शाहिद हुसैन साहब को कोषाध्यक्ष और जनाब शिराजुद्दीन साहब को सहायक जनरल सेक्रेट्री के पद पर मनोनित किया गया। विभिन्न विचारधारा और मस्लक के लोगों को प्रतिनिधित्व देते हुए उपाध्यक्ष सचिव का एक पैनल बनाया गया। अलग-अलग काम देकर उन कामों के अलग-अलग जिम्मेदार बनाए गए और उनके सहायक हेतु नब्बे (90) सदस्यों के साथ स्वागत समिति का सरपरस्त इमाम ईदगाह मौलाना अबू तैय्यब अहमद मियां फिरंगी महली को बनाया गया। सार्वजनिक सभा (जलसा-ए-आम) के लिए ईदगाह ऐशबाग का मैदान और विशेष बैठकों व सदस्यों के ठहराव के लिए हजहाउस की बात चल रही थी। बहुत सी बारिकियों और नजाकतों को देखते हुए विशेष अधिवेशन के लिए दारूलउलूम नदवतुल-उलमा और सार्वजनिक सभा के लिए ईदगाह ऐशबाग़ का विशाल मैदान तय हुआ। अब जोर-शोर से तैयारियां शूरू हो गईं। दौरे किये जाने लगे। नदवतुल-उलमा के निरीक्षक (नाजिर आम) मौलाना सैय्यद मुहम्मद हम्जा हसनी नदवी ने दावत व इर्शाद विभाग से मौलाना आफताब आलम खैराबादी नदवी, मौलवी अब्दुल वकील नदवी को उसके लिए मुक्त कर दिया। इधर मौलाना सैय्यद मुहम्मद गुफरान नदवी, मौलाना कफील अहमद नदवी को भी कुछ कार्यक्रमों में भेजा। शहर से मौलाना मुहम्मद कुरैश नदवी, मौलाना मुहम्मद मुश्ताक नदवी और मौलाना ख़ालिद रशीद फिरंगीमहली और उनके सहायक व सहयोगियों ने लखनऊ व आसपास क्षेत्रों और पड़ोसी जिलो के अलावा इलाहाबाद, गोरखपुर,

बस्ती गोंण्डा, लखीमपुर और शहर के अन्दर सभी महत्वपुर्ण स्थानो पर पुरजोश दौरे किये और इस जलसे को कामयाब बनाने के लिए लोगों को तरह–तरह से आमादा किया। इसके अतिरिक्त शहर के व्यापार मण्डलों, पत्रकारों, ष्यवस्थापकों और हर क्षेत्र के मान्य व सम्मानित लोगों की अलग–अलग मीटिंगें हुईं। स्वागत समिति के अनेक बैठक दारूलउलूम नदवतुल उलमा, इस्लामिया कालेज ईदगाह और अन्य दूसरे स्थानों पर लगातार होती रही, और जोश व ज़ज्बे में बढ़ोतरी होती ही चली गई। शहर कानपरु ने बहुत सहयोग दिया। रायबरेली में हर खास व आम में वह जोश व जज्बा पैदा हुआ जो कभी खिलाफत ऑदोलन के अवसर पर रहा होगा। सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी और महमूदाबाद आदि का भी यही हाल रहा।

दारूलउलूम नदवतुल–उलमा के लिए ऐसे किसी अधिवेशन का आयोजन कोई नई बात न थी। सन् 1975 में पच्चासी वर्षीय भव्य शैक्षणिक समारोह, सन् 1948 में जमीयतुलउलमा का ऐतिहासिक अधिवेशन, सन् 1995 में इस्लाहे मुआशरा की बेमिसाल कान्फ्रेंस, सन 1997 में कादियानियत के विरुद्ध इन्टरनेशलन कान्फ्रेंस और सन् 1998 ,1983, 1986 में साहित्य सम्बन्धी विषयों पर राबेता अदबे इस्लामी की अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रेस एक नया इतिहास रच चुकी थी। इसी प्रकार दीनी तालीमी कान्फ्रेस भी नदवा की यादगार कान्फ्रेंस थी। ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का 2000 में एक अधिवेशन हो चुका था जिसमें बोर्ड अध्यक्ष का इन्तिखाब भी हुआ था। उसके अतिरिक्त कार्यकारिणी की अनेक बैठकें हो चुकी थीं और नदवा व शहर ने मन से सहयोग किया था। ये इक्कीसवां अधिवेशन कई कारणों से अतिमहत्वपूर्ण था इस कारण ये आशा की जा रही थी कि सदस्यों व आमंत्रितों की बड़ी संख्या शामिल होगी। इसके अतिरिक्त अन्य और मेहमान आएंगे फिर भी पांच सौ का अनुमान था और 800 के करीब पहुंचे। परीक्षा पहले करा कर उन दिनों छुट्टी नदवा के प्रबंधकों ने कर दी थी। हॉस्टल खाली करा दिये गए। अतः महदुल्कुर्आन, अतहर, और सुलैमानिया हॉस्टल मेहमानों की सेवा में पलके बिछाए रहे। वहां स्वागत समिति की ओर से एक काउन्टर बना दिया गया जहां आदरणीय शिक्षकों और छात्रों का एक समूह रहता जो न दिन को थकता न रात को सोता उन सबके सर्वेसवी उस्तादे मुहतरम मौलाना अब्दुल अज़ीज़ भटकली नदवी थे, और उनके विशेष सहयोगी मौलाना मुहम्मद ख़ालिद नदवी गाजीपुरी, मौलाना फख़रूलहसन नदवी, मौलाना फख़रूद्दीन तैय्यब नदवी, मौलान मुहम्मद इब्राहीम नदवी और मौलाना मुहम्मद अ़सलम मजाहिरी आदि थे।

मेहमानों की राहत के लिए नहाने, धोने के सामान उपलब्ध कराए गए और खाने–पीने की व्यवस्था उनके स्वभावनुसार की गई ताकि मेहमानों को किसी आवश्यकता के लिए स्वयं भाग–दौड़ न करनी पड़े। अतः ऐसा ही हुआ। अलबत्ता कुछ मेहमान होटलों में ठहरे जो फाइव स्टार या थ्रीस्टार होटल थे। लेकिन उन्होंने अपना खर्चा स्वयं ही वहन किया। मेहमानों के लिए गाड़ियों का बन्दोबस्त भी बहुत अच्छा था। मस्ऊद जीलानी साहब, अमीर ख़ालिद साहब और फैजुद्दीन साहब उसके जिम्मेदार थे और ये लोग बड़ी मुस्तैदी से अपना काम अन्जाम देते रहे।

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का पटना कार्यालय जिसमें अधिकतर अमारते शरीया फुलवारी शरीफ के लोग थे। देहली कार्यालय भी बहुत सरगर्म रहा और उनके सदस्यों ने दिन–रात ऐसी मेहनत की जो उन्हीं का हक़ था। इस्लाहे मुआशरा कमेटी का कार्यालय मुंगेर से आया था जिसमें सभी खानकाह व जामिआ रहमानी मुंगेर के लोग थे।

जुमा को अस्र की नमाज़ के बाद एक विशेष मीटिंग बोर्ड़ के पदाधिकारियों की हुई जिसमें वह बातें तय की गई जो अगली बैठकों में पेश की जानी थी। पहली बैठक जो मग़रिब की नमाज के बाद मौलाना मुईनुल्लाह नदवी हाल में हुई जिसमें साधारण सभा (मजलिसे आम्मह) के पदाधिकारी, असासी व मीकाती सदस्यों और आमंत्रित सदस्य शरीक थे। स्वागत समिति के सदस्य, सदस्यों

के साथ आए लोगों को अनुमति थी। बाद की बैठके समिति थी।

पहली बैठक में अध्यक्ष महोदय का अध्यक्षीप भाषण हुआ जिस पर वरिष्ठ सदस्यों ने उद्‌गार व्यक्त किया। मौलाना जलालुद्दीन अन्सार उमरी (अध्यक्ष जमाअते इस्लामी हिन्द) मौलाना मुफ्ती अशरफ अली (बंगलुर) मौलाना सैय्यद मुहम्मद वली रहमानी और कुछ महिला सदस्य उल्लेखनीय हैं। उपाध्यक्ष मौलाना सालिम कासिमी, मौलाना सैय्यद कल्बे सादिक़, मौलाना काका सईद उमरी और मौलाना फखरूद्दीन अशरफ साहब ने सकारात्मक और कुछ महत्वपुर्ण पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया।

बीस मार्च 2010 को कार्यकारिणी के लिए सदस्यों का चुनाव और असासी व मीकाती सदस्यों की जो जगहें खाली हुई थीं उनको भरे जाने का मुआमला हल हुआ। अध्यक्ष का कार्यकाल समाप्त होने पर नवीकरण या परिवर्तन का मसअला था। समस्त बोर्ड़ सदस्यों ने नवीनकरण के हक में वोट देते हुए फिर से हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी को अध्यक्ष चुना। बोर्ड़ के उपाध्यक्ष और जलसे के अध्यक्ष मौलाना डाक्टर सैय्यद कल्बे सादिक़ साहब ने फिर से उनका नाम पेश किया और इस प्रकार वह तीसरी बार निर्वोरोध निर्वाचित हुए। जिस पर लोगों ने बड़े ही हर्ष और प्रसन्नता का इज़्हार किया कि बोर्ड़ इस सम्बन्ध में एक बार फिर किसी भी तरह के विरोध, विवाद और कलह से पूरी तरह सुरक्षित रहा।

मगरिब के बाद महाचिव बोर्ड़ की रिपोर्ट पेश की गई। इस बैठक में बोर्ड सदस्यों के साथ आमंत्रित लोग भी शरीक थे रिपोर्ट बहुत ही व्यापी और बोर्ड की समस्त गतिविधियों को समेटे हुए थी। फिर भी कुछ सदस्यों ने कई अहम पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया और कुछ नये मसअलों को रखा। इस प्रकार बैठक बहुत सफल रही।

तीसरे दिन इतवार को दिन की बैठक में उपसमिति के सभी कन्वीनरों ने अपनी–अपनी रिपोर्ट पेश की। इस्लाहे मुआशरा कमेटी की रिपोर्ट मौलाना सैय्यद मुहम्मद वली रहमानी ने, तफ्हीमें शरीअत कमेटी की रिपोर्ट मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने, दारूलकजा कमेटी की रिपोर्ट मौलाना अतीक अहमद बस्तवी ने और बाबरी मस्जिद से सम्बन्धित रिपोर्ट जनाब जफरयाब जीलानी ने पेश किया जिसपर डॉ0 कासिम रसूल इलयास साहब, यूसुफ हातिम साहब, अब्दुलकदीर एड़वोकेट साहब, कलाम फारूक़ी साहब, डॉ0 मन्जूर आलम साहब, प्रोफेसर शकील समदानी साहब, मौलाना यासीन अली उस्मानी साहब, मुहम्मद अदीब साहब (एस0पी0) ने विचार रखे। मौलाना सैय्यद मुहम्मद वली रहमानी साहब ने अंत में कहा कि हमें हिन्दुस्तान में मुकम्मल शरीअत के साथ रहना है और यहां का कानून हमें पूरी इजाजत देता है। उसके बाद मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने लखनऊ का अलामिया पेश किया। हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब ने सदस्यों का शुक्रिया अदा किया और कहा कि आप ने मुझे चुना मैं असमर्थता की इच्छा रखता था। इसको मैंने इसलिए कुबूल किया कि आप लोग इसे नाखुशगवारी से न जोड़ें। आप लोग दुआ करें कि अल्लाह इस जिम्मेदारी को उठाने की क्षमता और उसको अदा करने की तौफ़ीक दे।

उन्हीं की दुआ पर अधिवेशन समाप्त हुआ और सभी हज़रात अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए बैठक से उठे और ज़ुहर की नमाज़ अदा की।

भव्य आम सभा

बोर्ड का सिद्धान्त रहा है कि उसके अधिवेशन के साथ एक भव्य आम सभा का आयोजन शहर के विशाल मैदान में किया जाता है। जिसकी अध्यक्षता बोर्ड अध्यक्ष करते हैं और स्वागतीय भाषण बोर्ड के महासचिव देते हैं। उसकी तैयारी जोर–शोर से दो महीने से जारी थी। उसके लिए स्वागत समिति के सदस्यों ने दिन–रात एक कर दिया था, और दूसरे ज़िलों के इस्लाहे मुआशरा कमेटी से सम्बन्धित पदाधिकारियों व बोर्ड़ के शुभचिन्तकों ने एक अहम मिल्ली मसला समझकर और शरीअत की हिफाज़त के काम में हिस्सा लेने की भावना से जमकर प्रयास किया था। उसका

परिणाम ये हुआ कि जिलों से बसों, कारों और दूसरी सवारियों, रेलगाड़ियों के द्वारा समूह दर समूह लखनऊ पहुंचे। जबकि लखन्नऊ वासियों ने बाजार बन्द करके पूरे तौर पर शामिल होने का मुजाहिरा किया और मेहमान– नवाज़ी का वह बेहतरीन नमूना पेश किया जिसकी मिसाल नहीं मिलती। खाने–पीने की चीज़ें जगह–जगह रखीं। स्टाल लगाए। होटल कायम किये। शर्बत की सबीले लगाईं। रास्ता बताने वाले लगाए गए। सदस्यों और मेहमानों को मंच तक पहुंचाने का शानदार इन्तेजाम किया और मंच पर लखनऊ की नवाबी तहज़ीब का नमूना पेश करते हुए चाय, पानी, पान और शर्बत का वह इन्तेजाम किया जो देखने के काबिल था। फिजूलखर्ची से परे नफासत का दामन न छोड़ते हुए बड़े आदाब व तहज़ीब के साथ एक–एक चीज़ पेश की जाती थी। जब बोर्ड़ अध्यक्ष का आगमन हुआ तो भीड़ की खुशी का ठीकाना न रहा। गाड़ी को मंच तक लाया गया और ऐसा ऐतिहासिक स्वागत किया गया कि हैदराबाद की याद ताजा हो गई जहां वह पहली बार बोर्ड़ अध्यक्ष बने थे। जब वह मंच पर पहुंचने लगे तो बरेलवी मकतबे फिक्र के आलिम मौलाना इदरीस बस्तवी सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने नारों के गूंज में जबरदस्त स्वागत किया और अपने मीरे कारवां को खुश आमदेद कहा। लेकिन बोर्ड अध्यक्ष की तबीअत खराब हो गई थी इसलिए वह व्याख्यान न दे सके। अलबत्ता विशेष बैठकों की समाप्ति पर जो नसीहत फरमाई वही इस मजमें के लिए भी है जिसका खुलासा पेश है।

"अल्लाह ने यहां जमा होने की तौफीक दी एकताबद्ध होकर इस सम्बन्ध में जो कर्तव्य बनता है उसे पूरा करने का निर्णय लें। हम जितनी कोशिश करेंगे उतनी ही अल्लाह की कृपा हमें प्राप्त होगी। हमारे मसलों का सबसे बड़ा हल ये है कि हमारा जीवन अल्लाह के आदेशों के अति–निकट हो। हम इस बात पर खुशी ज़ाहिर करते हैं कि हमारा ये अधिवेशन इस कामयाबी के साथ अन्तिम पड़ाव पर पहुंचा हम समस्त इतिहास को देखते आए हैं कि जिसने हिम्मत और सुयुक्ति से काम लिया उसने प्रभुत्व जमा लिया। सबसे बड़ी बात ये है कि ये अरब जो शिक्षा से दूर थे इमाम (नेता–नायक) बन गए और सबसे अधिक शिक्षित समझे गए। मुसलमानों ने साहस, सुयुक्ति और बलिदान से जब–जब काम लिया तो कामयाबियों ने उनके क़दम चूमे।

आम सभा की विशेष बात ये रही है कि उसमें समस्त विचारधारों, पंथों, मदरसों, आन्दोलनों (तहरीकात) और संस्थाओं की भरपूर नुमाइन्दगी रही। कुछ वक्ताओं और श्रोताओं यहां तक कि अखबारों के अनुसार जनसैलाब दस लाख की भीड़ पर आधारित था फिर भी अतिशयोक्ति (मुबालगा) न किया जाए तो सात लाख की संख्या पर सभी सहमत हैं। जब जफरयाब जीलानी साहब ने विशाल आम सभा की समाप्ति पर धन्यवाद दिया तो उन्होंने स्वीकार किया कि पच्चास (50) साल के इतिहास में हमने ऐसा मजमा नहीं देखा। मौलाना अनीसुर्रहमान कासिमी नाजिम अमारते शरीअह बिहार ने कहा कि इस शान–बान के साथ अधिवेशन और भव्य आम सभा हैदराबाद में हुआ था या फिर अब लखनऊ में हुआ और लखनऊ सबसे आगे निकल गया। मौलाना सैय्यद मुहम्मद वली रहमानी सक्रेट्री बोर्ड और मौलाना मुहम्मद सालिम कासिमी अध्यक्ष बोर्ड़ ने अगले दिन नदवतुल–उलमा के व्यस्थापकों की मिटिंग में खुलकर स्वीकार किया कि जिस तरह का प्रबन्ध किया गया उसमें नदवा और अहले लखनऊ ने मिसाल कायम कर दी और ये अधिवेशन नदवा के अध्यापक गण, छात्रों, व्यवस्थापकों और हज़रत नाजिम साहब क उच्च–प्रबन्धन का सुन्दर चित्रण था। आम सभा की विशेषता ये थी कि इतना बड़ा जन समूह लेकिन कोई हंगामा और बेतुकापन सामने न आया। मजमा सुकून से बैठा रहा, यहां तक कि रात के दो बज गए। फिर लोग सुकून से अपनी–अपनी जगहों पर गए। नमाजों का एहतेमाम रहा। मग़रिब इशा की नमाज़े जमाअत के साथ अदा की गईं। शहर के

समस्त संगठनों और धार्मिक कल्याणकारी संस्थाओं ने भरपूर साथ दिया। तब्लीग़ी ज़माअत के लोग राहत पहुंचाने से बड़े सरगर्म रहे और नमाज़ व वुज़ू आदि के सम्बन्ध में उनके प्रयास प्रसंशनीय रहे। दो तीन जमाअतें दुआ और एतेकाफ करते हुए मस्जिद में रही ताकि ये अधिवेशन और आम सभा सुचारू रूप से अपने उद्देश्य को अमली जामा पहनाते हुए समाप्त हो।

वक्ताओं में किस–किस का नाम लिया जाए। लम्बी सूची है। मौलाना यासीन अली उस्मानी बदायूनी, मौलाना सैय्यद सलमान हुसैनी नदवी, मौलाना अब्दुल वहाब ख़िल्जी, मौलाना इद्रीस बस्तवी, के व्याख्यानों ने ईमान के ताप से खूब गर्माया। मौलाना तकीउद्दीन नदवी और मौलाना शाह कमरूज्जमा इलाहाबादी ने ईमान व यकीन और इस्लाहे नफ़्स से दिलों को पिघलाया। साथ में मौलाना कल्बे सादिक़ और मौलाना कल्बे जव्वाद के भाषणों ने एकता और अखंडता के जोर से सरकार को ये सन्देश दिया कि ये समझना फरेब है कि इस्लाम धर्म विभिन्न गिरोहों में बट कर एक दूसरे का गिरेबा पकड़े हुए हैं, गिरोह ज़रूर हैं लेकिन अल्लाह, रसूल और कुर्आन व शरीअत के नाम पर सब एक हैं और किसी के दिल में कोई दरार नहीं हैं। मौलाना सैय्यद निजामुद्दीन साहब महाचिव बोर्ड ने अन्तिम व्याख्यान दिया, जिसमें इस्लाम के आइली निज़ाम, और नैतिक सन्देश को बहुत ही व्यापी और स्पष्ट शैली में पेश किया गया। उनसे पुर्व मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी ने सम्पुर्ण इस्लाम को बहुत ही संक्षिप्तकरण और व्यापकता के साथ पेश किया। बोर्ड पदाधिकारियों में मौलाना सालिम कासिमी की भी तकरीर हुई जिसमें ज्ञान, प्रेम और अपने पालनहार की कृपा का वर्णन था। जनाब मुहम्मद अब्दुर्रहीम कुरैशी ने संचालन का दायित्व निभाया मौलाना रिज़वान अहमद नदवी उनके सहयोगी थे। जबकि स्वागतीय भाषण मौलाना ख़ालिद रशीद फिरी महली ने दिया जो आम सभा के व्यवस्थापक थे। दो पुस्तकों का विमोचन भी हुआ जिसमें एक का नाम "मज्मुआ फतावा" जो अल्लामा अब्दुल हई द्वारा रचित है और दूसरी "मोहसिने इन्सानियत" जिसके रचियता नदवा के "मुअतमद तालीम" मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी है। आम सभा का आरम्भ कारी कमरूद्दीन दारूलउलूम फिरंगी महल की तिलावत से हुआ और बोर्ड़ सदस्य मौलाना महफूजुर्रहमान औरंगाबादी ने दिलो को तड़पाने वाली आवाज़ में नअ़त पेश की उनके अलावा अनीस परखासवी इलाहाबादी की जादू भरी आवाज़ ने भी श्रोताओं पर अपना जादू चलाया।

दुआ हज़रत अमीरे शरीअत मौलाना सैय्यद निजामुद्दीन साहब महासचिव बोर्ड़ के दिल से निकले अल्फाज़ से हुई, एक–एक शब्द दिल पर असर कर रहा था और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ईमान व यक़ीन से भरपूर ये दुआ कुबूल होती जा रही है। कुबूलियत के आसार जाहिर हो रहे थे जो इशारा दे रहे थे कि इन्शाअल्लाह ये सभी कोशिशें अल्लाह के यहां अवश्य मान्य होंगी जो इस अधिवेशन और आमसभा के तअल्लुक से हुई हैं।

धन्यवाद समिति

लखनऊ अधिवेशन के सफलता की चहुंओर मुबारकबाद दी जाने लगी हर कोई हर्षित और गदगद दिखाई दे रहा था कि अल्लाह ने किस बेहतरीन तरीके से इस अधिवेशन को आयोजित कराया। इसलिए हर कोण ये अधिवेशन आदर्श अधिवेशन बन गया और उसने एक नया इतिहास बना डाला। अतः लखनऊवासियों और स्वागत समिति के सदस्यों ने जो जी तोड़ मेहनत की उनको धन्यावद देने हेतु अब्बासिया हाल में एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मुहम्मद सुलैमान रहीमाबादी साहब की और कहा कि दिल चाहता है कि जो मेहनत और कोशिश की गई है उसका विवरण पेश किया जाए लेकिन समय नही है। बहरेहाल इससे लखनऊ में एक इतिहास बना है।

जलसे की कामयाबी के लिए दारूलउलूम नदवतुल–उलमा व नाज़िम नदवतुल उलमा के नाम के जुडे होने को महत्व दिया। और

कहा कि; इसलिए लोग समूह दर समूह इक्ट्ठा हुए और जब हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे साहब हसनी नदवी मंच पर आए तो जो उत्साह, जज्बा जोश लोगों में था, उसकी एक लहर दौड़ गई। उन्होंने मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली और उनके सहयोगियों को धन्यवाद दिया कि उनके परिश्रम प्रसंशा के पात्र हैं। स्वागत समिति के समस्त सदस्यों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि जलसे की कामयाबी में उनकी दौड़–धूप का बड़ा हाथ था।

इसके अतिरिक्त कहा कि मौलाना अब्दुल अज़ीज़ भटकली नदवी उनके सहयोगी और नदवा के आदरणीय अध्यापकगण और छात्रों ने जो कोशिशें की उसने वह प्रभाव छोड़ा है जो मिट नहीं सकता। मेहमानों को दो बजे रात को भी किसी चीज की जरूरत पड़ी पेश कर दी गई।

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने हम्द व सलात के बाद कहा कि "भाइयों, करीबियों और दोस्तों! हम आप इसी शहर के रहने वाले हैं। आप लोग हाजिर हुए और आप लोगों ने अधिवेशन की कामयाबी के लिए जो सहयोग दिया वह वास्तव में ऐतिहासिक सहयोग है। जब अधिवेशन लखनऊ में हो रहा था तो मुझे बहुत शंका थी, कि यदि लखनऊ से वह सहयोग न मिल सका तो बड़ी बदनामी होगी। भाई ख़ालिद रशीद साहब निमंत्रण दाता (दाअी) थे। उनकी भी चिन्ता थी कि दिल न टूटे इसलिए संकोच और शंका से घिरा था। मेहमानों की सुविधा की भी चिन्ता थी, इसलिए कि कुछ मेहमान ऐसे होते हैं जो मामूली जगह पर नहीं ठहर पाते, यद्यपि अधिकतर ऐसे नहीं होते, फिर भी सबका ध्यान रखना पड़ता है। आप लोगों ने अपनी मेहनतों, कोशिशों और हौसलों से इस अधिवेशन को आदर्श अधिवेशन बना दिया जो मेहमान आए वह बड़े आभारी हैं और प्रसंशा कर रहे हैं। हमारे भाई सुलैमान साहब ने हमारा और नदवा का जिक्र किया उसकी आवश्यकता नहीं थी। नदवा पर ये जिम्मेदारी डाली गई थी तो उसको ये भार उठाना ही था।

असल बात ये है कि आप लोगों का सहयोग न मिलता तो हम ये सफलता अर्जित न कर पाते। जहां तक मतभेद का सम्बन्ध है तो राय का एख़्तेलाफ आपसी मतभेद का माध्यम नहीं बनता और न बनना चाहिये जिससे कश्मकश हो और दिलों में गुबार आए। राय का एख्तेलाफ अच्छी चीज़ है इससे समस्याओं का निदान होता है। खुशी की बात ये है कि ये बात इसी दायरे तक सीमित रही और आपसी सम्बन्ध व प्रेम बरकरार रहा। ये विशेषता अल्लाह के करम से हमारे बोर्ड को भी बड़ी हद तक हासिल है। बोर्ड़ के पदाधिकारियों को ये अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी बात पेश करते हैं लेकिन अपनी राय थोपते नहीं। हमारे शहर के लोगों ने जिस एकता के साथ इस अधिवेशन को सम्मान व प्रतिष्ठा की उचाइयों तक पहुंचाया वह शुक्र की बात है कि अल्लाह ही ने उन्हें क्षमता दी। अल्लाह का करम रहा कि बड़ी संख्या में बोर्ड़ सदस्य शामिल हुए। इसी प्रकार बड़ी संख्या में विशेष आमंत्रित सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज कराई और सभी खुश होकर गए। लखनऊवासियों ने जो उच्च व्यवहार का प्रदर्शन किया उसकी प्रसंशा प्रत्येक ने की। यहां से जो सन्देश गया है उससे बोर्ड का महत्व बढ़ेगा। हमें भारतीय संविधान में शरीअत पर अलम करने का जो अधिकार दिया गया है उसे हासिल करने के लिए बोर्ड मेहनत करता है। सरकार ये महसूस करे कि इन समस्याओं से आंखे नहीं चुराई जा सकतीं। और कोर्ट को ये याद दिलाया जाए कि वह शरीअत के मसलों को मालूम करके निर्णय दे। बोर्ड की उपसमितियां अपना–अपना काम कर रही हैं। लीगल सेल कमेटी न्यायायिक निर्णय पर नज़र रखती है, वह देखती है कि कोई ऐसा निर्णय न आए जो शरीअत के विरुद्ध हो। आप लोगो का जो सहयोग मिला वह बोर्ड के ताकत का माध्यम बनेगा। बैठक धन्यवाद देने हेतु, आयोजित की गई है। बहरेहाल लखनऊवासियों ने जो मेहनत की वह प्रसंशनीय है।

❑❑

किस्त 23

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
खुदनविश्त	स्वयं लिखित	ख़ुशख़बरी	शुभ समाचार	ख़ौफ	भय
ख़ुदी	अहंकार	ख़ुशजाइका	स्वादिष्ट	ख़ौफजदा	भयभीत
ख़ुराक	आहार	ख़ुशदामन	सास	ख़ौफनाक	भयंकर
ख़ुर्द	छोटा	ख़ुश दिल	प्रसन्न चिन्त	ख़ून	रक्त
ख़ुर्दबी	सूक्षम दर्शक	ख़ुशतबअ	प्रसन्न चिन्त	ख़ून आलूद	रक्तरंजित
ख़ुदेसाल	अल्पायु	ख़ुश रंग	सुवर्ण	ख़ूंबहा	नर हत्या
ख़ुर्द व नोश	खान पान	ख़ुश गुलू	सुकंठ		अर्थ दण्ड
ख़ुर्शीद	सूर्य	ख़ुश गवार	रुचिकार	ख़ूंख्वारी	हिंसा
ख़ुश आमदेद	ख़ुशागमन	ख़ुश किसमत	भाग्यवान	ख़ूं रेजी	रक्तपात
ख़ुशामद	चाटु कारिता	ख़ुशनसीब	भाग्यवान	ख़ूनी	हिंसक
ख़ुशामद पसन्द	चाटुकरता प्रिय	ख़ुश किसमती	सौभाग्य	ख़ूनी	हत्यारा
ख़ुशा नसीब	अहो भाग्य	ख़ुशनसीबी	सौभाग्य	ख़ूनीं	रक्तयुक्त
ख़ुशइलहां	सुकंठ	ख़ुश मंजर	सु दृष्य	ख़वेश	स्वजन
ख़ुश उसलूबी	सुचारुता	ख़ुशनुमा	सुन्दर	ख़ियाबां	फुलवारी
ख़ुश इन्तिजामी	सुव्यवस्था	ख़ुशनूदी	प्रसन्नता	ख़याल	विचार
शुश अंजाम	सुरवांत	ख़ुश नवीस	सुलेख़क	ख़यााली	कलिप्त
ख़ुशबू	सुगन्ध	ख़ोशाचीं	उंछ शील	ख़ियानत	विश्वासघात
ख़ुशबूदार	सुगंधित	ख़ोशा चीनी	उंछ वृत्ति	ख़ैर	भलाई
ख़ुशबयान	सुभाषी	ख़ुशी	प्रसन्नता	ख़ैर अन्देश	शुभचिंतक
ख़ुशहाल	समृद्ध	ख़ौज	ध्यान	ख़ैर ख्वाह	हितैषी

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

ईरान भी अब एटमी ताकत

तेहरान! ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने एलान किया कि उनका देश उच्च संवर्धित यूरोनियम की प्रथम खेप तैयार करने के साथ ही 1979 के इस्लामी क्रांति की सालगिरह के मौके पर एक 'परमाणु सम्पन्न' देश बन गया है। अहमदीनेजाद ने कहा, 'एक दिन उन लोगों ने कहा था कि हम यूरेनियम का संवर्द्धन नहीं कर सकते हैं, लेकिन हमारे नेताओं, राष्ट्र के प्रतिरोध से और खुदा की मदद से ईरान परमाणु सम्पन्न देश बन गया।' उन्होंने तेहरान में हजारों लोगो की भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, 'ये (अमेरिकी) हमारे देश पर दबदबा कायम करना चाहते थे लेकिन ईरान की अवाम उन्हें ऐसा कभी नहीं करने देगी।'

इजराइल को बर्बाद कर देंगे

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीने-जाद फिर दहाड़े, कहा सैन्य कार्रवाई शुरू की तो इजराइल को गंभीर नतीजा भुगतना होगा।

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने इजराइल को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि पश्चिम एशिया में कोई भी सैन्य कार्रवाई शुरू करने पर उसे इसका गंभीर नतीजा भुगतना पड़ सकता है। यह भी खबर है कि ईरान ने एक ऐसी नई प्रणाली विकसित की है जिसके जरिए बैलेस्टिक मिसाइल के किसी भी हमले को रोका जा सकेगा। सरकारी प्रसारक आई आर आईवी ने श्री अहमदीनेजाद के हवाले से कहा कि इस इलाके में युद्ध छेड़ने पर इजराइल को तगडे प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा और हमेश के लिए उसे समाप्त कर दिया जाएगा।

गुटखे में फिर मिला हानिकारक गैम्बियर

जन विश्लेषक प्रयोगशाला में जां के लिए आए नमूनों में पाई गई मिलावट

लखनऊ! पान मसाला खाने वाले सवधान! अधिक मुनाफा कमाने के चक्कर में मिलावटखोर इसमें कत्थे की जगह 'गैम्बियर' मिला रहे हैं। जन विश्लेषक प्रयोगशाला की एक रिपोर्ट में इसकी पुष्टि हुई है। कई नामी कम्पनियों के गुटखे में कत्थे की जगह चमड़े को चमकाने वाली पॉलिश का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां पैदा करता है।

कैद है या राजयोग!

आतंकवादी कसाब पर रोज 8.5 लाख रुपए खर्च हो रहे हैं, 15 महीनों में लगभग 39 करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं

पाकिस्तानी आतंकवादी अजमल आमिर कसाब को जिन्दा और स्वस्थ रखन के लिए उस पर रोजाना लगभग साढे आठ लाख रुपए खर्च किए जा रहे हैं। अनुमान है कि 26/11 को मुंबई पर हुए आतंकी हमले के बाद से अब तक 15 महीनों में उस पर 39 करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं। कसाब पर होने वाले खर्च के बारमें में न तो महारष्ट्र सरकार और न ही केन्द्र सरकार की तरफ़ से आधिकारिक जानकारी दी जा रही है। आतंकी हमले के दौरान कसाब इकलौता आतंकी है जिसे जिंदा पकड़ा गया है। कसाब को आर्थर रोड जेल में रखा गया है। वहीं उसके मामले की सुनवाई के लिए विशेष अदालत का गठन किया गया है। आर्थर रोड जेल में उसके रहने के लिए करोड़ों खर्च करके बुलेट प्रूफ सेल बनाया गया है। इलाज के लिए जेजे अस्पताल में भी एक बुलेट प्रूफ सेल तैयार किया गया है। वहां सिर्फ कसाब को इलाज के लिए लाया जाता है। कसाब के लिए विशेष डॉक्टरों की टीम है।

उसकी सुरक्षा पर किसी भी गिरफ्तार आतंकी से सबसे ज्यादा खर्च किए जा रहे हैं। उसके कपड़ों और मनोरंजन पर भी खूब पैसा खर्च हो रहा है।

❑❑